द्वितीय अध्याय

हिन्दी निबंध साहित्य : स्वरूप एवं विकास

द्वितीय अध्याय

हिन्दी निबंध साहित्य : स्वरूप एवं विकास

निबंध का स्वरूप :

निबंध का मौलिक अर्थ है बाँधना । नि + बंध (बाँधना) । निबंध का प्रयोग लिखे हुए भोज पत्रों को सँवार कर बांधने या सीने की क्रिया के लिए भी होता था, परन्तु कालांतर में अर्थ संकोच के रूप में केवल साहित्यिक कृति के लिए इसका प्रयोग किया जाने लगा ।

संस्कृत में इसका समानार्थी और अधिक व्यापक शब्द 'प्रबंध' आता है । इसका मूल अर्थ है - संदर्भ या ग्रंथ रचना । किसी विषय पर कल्पना से ग्रंथ-रचना करना भी प्रबंध कहलाता है । धीरे-धीरे यह शब्द केवल काव्य के लिए प्रयुक्त होने लगा और प्रबंध-काव्य के लिए रूढ़ हो गया । लेकिन आज निबंध और प्रबंध दोनों ही अपने मूल या रूढ़ अर्थों में प्रयुक्त नहीं होते । आज प्रबंध का प्रयोग उस गद्य रचना के लिए किया जाता है, जिसमें लेखक किसी विषय का विस्तार से अपनी भाषा शैली में विवेचन करता है । इसे अंग्रेजी के 'थीसीस' का समानार्थक कहा जा सकता है ।

निबंध अत्यंत परिष्कृत और प्रौढ़ गद्य का प्रतीक है । निबंध का शाब्दिक अर्थ है - सूत्रों में आबद्ध गठी हुई रचना । "निबंध आकार में लघु और अत्यधिक संगठित और समास शैली में लिखा गया होता है और प्रबंध बड़े आकार का तथा व्याख्यात्मक होता है ।"[१] निबंध की सहजता प्रबंध में नहीं मिलती । जिस प्रकार की चेतना और जीवतंता निबंध में होती है, वैसे वह प्रबंध में नहीं होती । प्रबंध में योजनाबद्ध परिश्रम, सैद्धान्तिक विवेचन और विस्तार रहता है । प्रबंध किसी विषय

पर लिखी गयी एक संपूर्ण वाङ्मयीन कृति है । निबंध में निबंधकार का व्यक्तित्त्व निहित होता है । प्रबंध में प्रबंधकार का परिश्रम, उसका अध्ययन, ज्ञान, सूक्ष्म दृष्टि और विवेचन होता है ।

निबंध में भावना के साथ विचारों को पिरोना, एक साथ बांधना, बुनना या संकलन करना । इसे लेख से कम व्यापक समझा जाता है । निबंध के समानार्थी यह वह गद्य रूप है, जिसकी किसी विषय के, किसी प्रसंगों पर विचार व्यक्त किये जाते है । आज निबंध अपने मूल और रूढ़ अर्थों से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होता है । वह अपने सभी समानांतर पर्यायों के मौलिक तथा पारंपारिक अर्थों में भी भिन्न अस्तित्त्व रखता है । वास्तव में यह आज लैटिन के 'एग्जीजियर' (निश्चयता पूर्वक परीक्षण करना) से निकले फ्रेंच के 'ऐसाइ' तथा अंग्रेजी के 'एसे' का पर्याय हो गया है । जिसका शाब्दिक अर्थ प्रयत्न, प्रयोग या परीक्षण होता है और प्रयोग की दृष्टि से जो लघु या दिर्घ गद्य-रचना के लिए प्रयुक्त होता है । जिसमें निबंधकार अपनी आत्मीयता, वैयक्तिकता या निर्वेयक्तिकता के साथ किसी एक विषय या उसके किसी एक पहलू या प्रसंग पर अपनी निजी भाषा-शैली में भाव या विचार प्रकट करता है ।

निबंध गद्य की केन्द्रिय विधा है । हिन्दी में यह विधा आधुनिक युग की देन है । यह व्यक्ति और समाज की मानसिक चेतना और भावानुभूति की निर्बंध अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है । आचार्य रामचंद्र शुक्लजी ने निबंध का महत्त्व इन शब्दों में बताया है, "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है ।"[२] निबंध एक एसी विधा है जिसमें व्यक्ति अपने स्वतंत्र व्यक्तित्त्व, निजीपन, अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन अपने निजी ढंग से कर सकता

है । अपने कथन का तर्क, परस्पर संवाद का समन्वय करते हुए लेखक अपने व्यक्तित्त्व का प्रभाव पाठक के मन पर अंकित कर सकता है । वैचारिकता और आत्म-प्रकाशन का ऐसा प्रभावशाली और रोचक माध्यम संभवत: अन्य विधाएँ नहीं है ।

निबंध की परिभाषाएँ :

किसी भी साहित्य प्रकार की व्याख्या करने की मनुष्य की प्रवृत्ति उसके बुद्धिनिष्ठता की परिचायक है । कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, रेखाचित्र आदि हर विधा का रूप और उसकी सर्वमान्य व्याख्या साहित्य में निर्धारित हो चुकी है ।

समय-समय पर विद्वान आचार्यों और समीक्षकों ने निबंध की अनेक परिभाषाएँ प्रस्तुत की है ।

हम कुछ पाश्चात्य और कुछ भारतीय साहित्यकारों/विद्वानों की परिभाषाओं के संदर्भ में विचार करेंगे ।

१) अंग्रेजी के प्रख्यात रचनाकार **डॉ. सैम्युअल जानसन** ने कहा है कि, "निबंध मस्तिष्क के असंबद्ध विचारों का विस्फोटन है ।"

२) निबंधों का जनक **Montaingue** निबंधों को विचारों, उद्धरणों और कथाओं का मिश्रण मानता था ।

Essay in modley of reflction, quotation and anecdores.

३) **ऑक्सफोर्ड शब्दकोश** के अनुसार निबंध की आकृति सीमित और परिष्कृत होती है ।

Oxford Dictionary : Essay A Herary composition cusally prose and short on any subject.

४) **सर एडमंड गास** - ने निबंध को गद्य में सीमित आकार का लेख माना है ।

५) **जॉनसन** - ने निबंध को मन का आकस्मिक और उच्छखल आवेग और चिन्तनहीन बुद्धि विकास बताया है ।

Jonson : "A loose salley of mind and iragular undigested piece, not a regular and orderly performance."

६) **हडसन** - ने रचयिता के चिन्तन और चरित्र-चित्रण को निबंध के लिए आवश्यक बताया ।

Hydson : The true essay in essentially personal.

७) बेकन और मरे (Becon and Murray) - इन पाश्चात्य विद्वानों ने निबंध को संक्षिप्त गद्य रचना बनाकर उसमें आनुपातिक संक्षिप्तता और पूर्णता पर बल दिया है ।

पाश्चात्य विद्वानों के साथ-साथ भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई निबंध की कुछ परिभाषाएँ देखेंगे ।

१) **रामचंद्र शुक्ल** - ''गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है ।''[३] भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता हे, इसीलिए गद्य शैली के लिए अधिक तर निबंध को ही चुना जाता है । एक जगह शुक्लजी लिखते है - ''आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्त्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो ।''

२) **बाबू गुलाबराय** - "निबंध उस गद्य रचना को कहते है जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता साथ ही आवश्यक संगति और सुसंबद्धता के साथ किया गया हो ।"[४]

३) **डॉ. कोतमिरे** - निबंध वह एक साहित्यिक और ललित गद्य रचना है । जिसमें लेखक किसी विचार या विषय से प्रभावित होकर अपनी भाषा में अपने भावों या विचारों की क्रिया तथा प्रतिक्रिया को ऐसे सजीव ढंग से व्यक्त करता हुआ पाठक की मनोवृत्तियों को सचेत करता है कि वह कुछ काल के लिए प्रभावित होता रहे या विचार करता रहे ।[५]

४) **डॉ. श्रीकृष्ण लाल** - "भावों और विचारों की प्रधानता तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ, उसे निबंध साहित्य की संज्ञा दी गई । ... निबंध वह साहित्य रूप है जिसमें लेखक ने प्रतिपाद्य विषय के भीतर की अपनी रूचि, भावना और विचारों की स्वच्छंद अभिव्यक्ति की हो ।"[६]

५) **डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा** - "तर्क और पूर्णता का अधिक विचार न रखने-वाला गद्य रचना का वह प्रकार निबंध कहलाता है । जिसमें किसी विषय अथवा विषयांश का लघु विस्तार में स्वच्छंदता एवं आत्मीयतापूर्ण ढंग से ऐसा कथन हो उसमें लेखक का व्यक्तित्त्व झलक उठे ।"[७]

६) **डॉ. भगीरथ मिश्र** - "निबंध वह गद्य रचना है जिसमें लेखक किसी विषय पर स्वच्छन्दता पूर्वक परन्तु एक विशेष सौष्ठव, संहिति, सजीवता और व्यक्तिगत प्रकाशन के साथ अने भावों, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है ।"[८]

७) **डॉ. जयनाथ नलिन** - "किसी विषय पर स्वाधीन चिंतन और निश्चल अनुभूतियों का सरस सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन ही निबंध है ।"[९]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधर पर निबंध के निष्कर्ष इसप्रकार निकाले जा सकते हैं - निबंध में मूलत: निबंधकार का व्यक्तित्त्व ही प्रमुख रहता है । उसमें हृदय और बुद्धि दोनों का समन्वय रहता है । बिना वैचारिकता के निबंध की रचना संभव नहीं । निबंध की लघुता ही उसे सुव्यवस्थित और सुगठित रूप देती है । निबंधकार के लिए विषयों का कोई बंधन नहीं होता । किसी भी विषय पर निबंध लिखा जा सकता है । और उसमें व्यक्ति सापेक्षता होती है ।

निबंधकार, कवि, दार्शनिक, नेता, इतिहासकार सभी के गुणों को अपने निबंधों में समा लेता है । जिसमें जीवन का सजीव चित्रण होता है वही श्रेष्ठ साहित्य की कसौटी है । आ. शुक्लजी निबंध में विचार गांभीर्य एवं सामासिकता के हिमायती हैं ।

डॉ. गुलाबराय ने अपनी निबंध की परिभाषा में प्राय: सभी लक्षणों और तत्त्वों का समोवश किया हैं । डॉ. लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय निबंध में निबंधकार की वैयक्तिकता को महत्त्व देते हैं । उनके अनुसार निबंधकार अपने मनोनीत विषय में अपने व्यक्तित्त्व के रस से पगाकर प्रकट करता है । वह विषय का अध्ययन करके नहीं लिखता । वह पाठक के साथ आत्मीयता स्थापित कर लेता है । गद्य की यह केन्द्रीय विधा आधुनिक युग की देन है ।

डॉ. जयनाथ नलिन की परिभाषा के आधार पर निबंध की विशेषताएँ इस प्रकार निर्धारित की जा सकती है ।

१) **स्वाधीन चिन्तन** - अर्थात निजी विचार, तर्क-वितर्क, जीवन दर्शन, व्याख्या, परीक्षण इत्यादी युक्त मौलिक विचारधारा ।

२) **निश्चल अनुभूति** - अर्थात रागात्मकता, भावुकता, हृदय की भावनाओं का स्पष्ट, अवगुण्ठवरहित शुद्ध प्रकाशन ।

३) **सरसता** - अर्थात रसपूर्णता या काव्यात्मकता ।

४) **सजीवता** - अर्थात सबलता, गति, फोर्स युक्त शैली जो भावों -विचारों का गठन आदि से आती हैं ।

५) **मर्यादा** - अर्थात इसमें सानुपातिक आकार, फैलाव, विवेचन और सम्बन्ध विचार शृंखला, पूर्णता रसीमता हो ।

वैसे तो निबंध में व्यक्तित्त्व की ही प्रधानता होती है । निबंधकार अपने व्यक्तित्त्व को पाठक के सामने पूरी तरह स्पष्ट कर देता है । साधारण सी वस्तु को वह महत्त्वपूर्ण बना देता है, अथवा महत्त्वपूर्ण वस्तू को साधारण सिद्ध कर देता है ।

निबंधों का वर्गीकरण :

निबंधों के वर्गीकरण के अनेक आधार हो सकते हैं । बाह्य और आन्तरिक विविधता इसके मुख्य आधार है । वैसे भी विवेचन पद्धति, भाषा शैली, वस्तु विषय सभी निबंधों में समान नहीं हो सकते । व्यक्ति को प्रधान मानकर वर्गीकरण किया जाए तो व्यक्ति-प्रधान और विषय-प्रधान दो वर्ग हो सकते है । व्यक्ति प्रधान या वैयक्तिक निबंध में निजता पर ध्यान केन्द्रित रहता है । इस निजता को आत्मभिव्यंजकता या व्यक्ति प्रधानता भी कह सकते हैं । इसके अंतर्गत लेखक अपनी निजी वेदना, विफलता, हर्ष-विवाद, भाव-अभाव के साथ अपने को व्यक्त करना चाहता है ।

विषय-प्रधान निबंधों में अपने को अलग रखकर शेष संसार पर विचार किया जाता है । आचार्य शुक्ल निबंधों के दो प्रकार मानते है । मस्तिष्क की प्रधानतावाले विचारात्मक और हृदय की प्रधानता वाले भावात्मक ।

निबंधों के अनेक प्रकार है । जिनकी संख्या देना बहुत मुश्किल कार्य है । निबंध की बाह्य और आन्तरिक विविधता को आधार बनाकर इसका वर्गीकरण किया जा सकता है । बाह्य विविधता में विवेचन पद्धति भाषा-शैली, वस्तु-विषय आदि आते हैं और आन्तरिक विविधता में विचार, भाव, अनुभूतियाँ, संवेदना आदि इत्यादि का समावेश रहता है । वैसे तो निबंध के केन्द्र में व्यक्ति रहता है लेकिन मात्र व्यक्ति को निबंध के वर्गीकरण का आधार नहीं माना जा सकता सभी दृष्टिकोण से विचार करने पर मैंने निबंधों को इसप्रकार वर्गीकृत किया है ।

निबंध

वैयक्तिक (Subjective)
निजात्मक या विषयी प्रधान
(जिनमें निबंधकार 'निज' को केन्द्र में रखता है)

१) विचारात्मक (Reflective)

२) भावात्मक (Emotional)

१) आत्मपरक (Personal)

विषयप्रधान (Objective)
परात्मक
(इसमें निबंधकार अपने को अलग रखकर शेष जगत् की या विषयक की बात करता है ।)

१) वर्णनात्मक (Descriptive)

२) विवरणात्मक (Narrative)

१) विचारात्मक निबंध :

विचारात्मक निबंध में बुद्धि की प्रधानता रहती है । इसमें विचार का अधिकार अन्य तत्त्वों पर रहता है । लेखक ऐसे निबंधों में समाज, परंपरा, साहित्यिक आस्था, एक नवीन वैचारिक दृष्टि, नवीन संदेश देता है । विचारात्मक निबंधों में लेखक अपने सीमित दायरे में चिंतन की अधिक से अधिक बातों को समेट लेना चाहते है ।

इसप्रकार के निबंध सुगठित और नियंत्रित होते हैं । इन निबंधों में विषय की अनेक रूपता मिलती है । राजनीति, संस्कृति, समाज, परंपरा, नैतिक आदर्श, रस, भाव या साहित्य के किसी भी विषय को लेकर यह निबंध लिखे जा सकते हैं ।

इसप्रकार के निबंध में बुद्धितत्त्व प्रमुख रहता है । भावना और कल्पना को यहाँ उतना प्राधान्य नहीं मिलता । इसीलिए ऐसे निबंध में कभी-कभी नीरसता भी आ जाती है, लेकिन भावना और कल्पना के सहयोग से उसे रंजक भी बनाया जा सकता है । कटू और कठोर सत्य को भी शर्करा का लेप लगाकर गले के नीचे उतारा जा सकता है ।

विचारात्मक निबंधों में अधिकतर विचारों का ज्ञान रस भरा रहता है । भाषा सांकेतिक, श्लेषात्मक और संक्षिप्त होती है । प्रसाद शैली इसकी विषेषता है । आचार्य शुक्ल ने कहा है कि "शुद्ध विचारात्मक निबंधों का चरम उत्कर्ष नहीं कहा जा सकता है जहाँ एक-एक पैराग्राफ में विचार दबाकर कसे गए हो और एक-एक वाक्य किसी सम्बन्ध विचार-खण्ड को लिये हो ।"[१०]

हिन्दी में आचार्य शुक्ल, डॉ. नगेन्द्र, जैनेन्द्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी आदि ऐसे प्रमुख नाम है - जिन्होंने बहुत अच्छे विचारात्मक निबंध लिखे हैं । आचार्य शुक्ल की 'चिन्तामणि' में संग्रहित 'लोभ और प्रीति', 'क्रोध', 'श्रद्धा और भक्ति', 'घृणा' आदि, जैनेन्द्र के 'जैनेन्द्र के विचार', 'जड़ की बात', 'पूर्वोदय' आदि संग्रह, वासुदेव शरण अग्रवाल के 'पृथ्वी पुत्र' तथा 'कला और संस्कृति' आदि संग्रह में संकलित कुछ निबंध तथा आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी और डॉ. नगेन्द्र के सैकड़ों निबंध हिन्दी के विचारात्मक निबंध पठनीय हैं । डॉ. पीताम्बर दत्त बड़टवाल ने भी अच्छे विचारात्मक निबंध लिखे हैं ।

विचारात्मक निबंधों में भाव अथवा रागात्मक तत्त्वों की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती, अंशत: उसका भी अस्तित्त्व होता है । आचार्य शुक्ल ने इसका समर्थन किया है - "इस पुस्तक में मेरी अंतर्यात्रा में पड़नेवाले प्रदेश है । यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि, पर हृदय को साथ लेकर अपना रास्ता निकालती हुई बुद्धि जहाँ कही मार्मिक या भावाकर्षक स्थलों पर पहुँचती है, वहाँ हृदय थोड़ा बहुत रमता है अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कुछ कहता गया है । इसप्रकार यात्रा के क्रम का परिहार होता है । बुद्धि पथ पर हृदय भी अपने लिए कुछ न कुछ पाता रहा है । इसमें कल्पना, राग, बुद्धि एवं शैली सभी का सहयोग रहता है, भले ही बुद्धि प्रमुख हो और राग गौण ।"[११]

२) भावात्मक निबंध :

भावात्मक निबंधों में भाव-तत्त्व, हृदय का आग्रह प्रधान होता है । एक व्यक्ति के हृदय का भाव प्रेषित होकर दूसरे व्यक्ति का भाव बन जाता है । इसी को प्रेषणीयता कहते है । भावनाओं की तीव्रता, कल्पना की स्वच्छंद उड़ान भावात्मक निबंधों की पहचान है ।

कुछ निबंधों में भावुकता का अधिक्य होने पर भी विचारों की अंतर्धारा बराबर प्रवाहित होती रहती है । कुछ निबंध पूर्णत: भाव प्रधान होते हैं । अनुभूतियों की गहनता, भाव की तीव्रता एवं अभिव्यक्ति की स्पष्टता और निस्छलता भावात्मक निबंध की विशेषताएँ हैं । डॉ. जयनाथ का कहना है कि, "अपने भाव के प्रति एकांत एवं अड़िग आस्था भी चाहिए । इसे किसी पागल का प्रलाप नहीं कहा जाए, यह एक भावुक स्वस्थ हृदय का आत्म-निवेदन है । आत्म-निवेदन की पहली शर्त है - निछलता एवं ईमानदारी, यही आस्था और निश्छलता शैली को प्रवाह और भाषा को तरलता देती है । भाव और भाषा दोनों की तरलता से स्निग्धता और सरलता की कलियाँ खिलेंगी । तभी भावात्मक निबंध का अनुरोध सुना जाएगा । तभी पाठक उसमें लेखक और अपने आप को पा सकेगा । खो भी सकेगा । यही स्थिति भाव लीनता की होगी । तब निबंध में संगीत की मूर्छना भी आ जाएगी । इन सब गुणों से संपन्न रचना में ही हम भावात्मक निबंध का आदर्श पा सकेंगे ।"[१२]

द्विवेदी युग में लिखे गए - 'सधी वीरता', 'आचरण की सभ्यता', 'कन्यादान' सरदार पूर्णसिंह के निबंध । तथा माधव प्रसाद मिश्र के 'रामलीला', 'परीक्षा' आदि निबंध भाव-प्रधान होते हुए भी विचार-तत्त्व को साथ लिए हुए हैं ।

प्रसाद के 'आकाश दीप', 'स्वर्ग के खंडहर', 'चतुरसेन शास्त्री के 'अंतर्नाद', 'भावना', रामकृष्ण दास के 'साधना', 'प्रवाल' आदि भावात्मक निबंधों के उत्तम उदाहरण हैं ।

भावात्मक निबंधों में लेखक की सभी प्रकार की अनुभूतियाँ निहित होती है । इस निबंध की सीमा किसी एक भाव तक ही सीमित नहीं होती हास्य व्यंग्य की गद्यात्मक रचनाएँ भी भावात्मक निबंध में आती है । प्रतापनारायण मिश्र के -

'भौं', 'नाक', 'आँख' । बालकृष्ण भट्ट के 'आँसू', 'माधुर्य', 'माता का स्नेह', 'ईश्वर भी क्या ठठोल है ।' पूर्णसिंह के - 'ब्रम्ह क्रांति' । माखनलाल चतुर्वेदी के - 'साहित्य देवता', 'युग और कला', 'छलकत गगरी' । रामवृक्ष बेनीपुरी के - 'गेहूँ और गुलाब', 'मीरा नाची रे', 'लागत कलेजवा में चोट' । रामकुमार रघुवीर सिंह के - 'ताज', 'अवशेष', 'उजड़ा स्वर्ग' आदि निबंध भावात्मक निबंधों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं ।

३) आत्मपरक निबंध :

इसे व्यक्तिव्यंजक, वैयक्तिक और ललित निबंध भी कहा जाता है । वैयक्तिक निबंधों में आत्मपरक स्थिति से व्यक्तिपरक स्थिति की ओर निबंधकार उन्मुक्त होता है । इसप्रकार के निबंधों में निबंधकार सर्वथा उन्मुक्त और स्वच्छंद रूप से सामने आता है । और उसमें उसका निजी व्यक्तित्त्व व्यक्त होता है ।

इस संदर्भ में हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि - ''निबंध मात्र अन्य सभी रचना प्रकारों की अपेक्षा व्यक्ति व्यंजक होता ही है, पर निबंध में भी विषय-प्रधान निबंध विषयी प्रधान की अपेक्षा अल्प वैयक्तिक होते हैं । किसी भी तत्त्व निर्णय के लिए इस रास्ते को अपनाना ही पड़ेगा । परन्तु साहित्य केवल तत्त्व-निर्णय से ही संतुष्ट नहीं होता, वह कुछ नया निर्माण भी करना चाहता है । कोई भी व्यक्ति केवल भावावेगों का गठ्ठर नहीं होता । वह वस्तु को देखते समय यथाशक्य निस्संग बुद्धि से उसका यथार्थ भी निर्णय करता है । इसलिए वैयक्तिक या आसक्त भाव से उसका देखना वैज्ञानिक के देखने की क्रिया का विरोधी नहीं है, बल्कि उसी का भावावेग से सना हुआ कार्य है ।''[१३]

ये निबंध संस्मरण के अधिक निकट होते है । यह इतने स्वाधीन, वैयक्तिक और सशक्त होते हैं कि विचारात्मक निबंधों की तरह विचारों में डूबे हुए और भावात्मक निबंधों की तरह उन्मुक्त होते है । मानवीय संवेदनात्मक, जीवन की वैयक्तिक अभिव्यक्ति, एवं सहृदयता इन निबंधों की विशेषता होती है । हिन्दी में ऐसे निबंधों की परंपरा में प्रताप नारायण मिश्र जैसे विनोदी लेखक की कृतियों को रखा जा सकता है ।

डॉ. गुलाबराय का कहना है - "निबंध में व्यक्तित्त्व छिपाया नहीं जा सकता । लेखक जो कुछ लिखता है, उसको अपने निजी मत के रूप में अथवा अपने निजी दृष्टिकोण से लिखता है । उसके पीछे उसके निजी अनुभव की प्रेरणा दिखाई देती है । निबंध तभी होगा जबकि वह लेखक के किसी निजी दृष्टिकोण से देखा गया है।"[१४]

व्यक्तिव्यंजक निबंध आत्मीयता से ओत-प्रोत होते हैं । पाठक उसे अपने घरेलू परिवार की तरह रमकर पढ़ता है । उसकी उदासी भी अजनबी की उदासी नहीं होती, वह एक गहरी संवेदना की उदासी होती है और उसकी खुशी भी समष्टि के उल्लास की खुशी होती है ।

महादेवी वर्मा, शान्तिप्रिय द्विवेदी आदि लेखकों के निबंध इसी श्रेणी में आते है ।

४) वर्णनात्मक निबंध :

जिस निबंध में वर्णन की प्रधानता होती है वह वर्णनात्मक या वर्णन-प्रधान निबंध कहलाते है । इसप्रकार के निबंधों में विचार, अनुभूति, कल्पना सभी वर्णन को जीवन्त, मोहक, आकर्षक और रसपूर्ण बनाने में सहाय्यक होते हैं । इसप्रकार के निबंधों में कल्पना-तत्त्व की प्रधानता रहती है । कल्पना के माध्यम से एक जीता जागता चित्र प्रस्तुत करना ही लेखक की लेखनी की सफलता है ।

वर्णन में लेखक का व्यक्तित्त्व अवश्य प्रकट होना चाहिए । इसमें यह आवश्यक नहीं कि वह जीवन के कोमल या मोहक चित्र ही अंकित करे । उसकी विशेषता यह है कि वह प्रकृति के रूक्ष, मनुष्य के जीवन का अभाव, दैन्य, मूल्य-विघटन का वर्णन भी इतनी सशक्तता से करे कि पाठक को उसमें भी सजीवता लगे। उपेक्षित को कला का विषय बनाना कला का साध्य है और कलाकार की महानता भी।

कल्पना के साथ इसमें भावना और रागात्मक तत्त्व भी होते है । सरलता, सुबोधता इसकी शैली के प्रधान गुण है, परन्तु ऐसे निबंधों में प्रसाद गुण शुरू से आखिर तक बना रहता है और यही इसकी सफलता का कारण है ।

किसी वस्तु, दृश्य, स्थान आदि का वर्णन इन निबंधों में कल्पना शक्ति के माध्यम से बड़े सजीव और आकर्षक ढंग से किया जाता है । इनमें विशेष रूप से प्राकृतिक वस्तुओं - नदी, पहाड़, वृक्ष, जंगल, त्यौहार, रहन-सहन, मेले-तमाशे यात्रा आदि का वर्णन रहता है ।

कल्पना-प्रधान वर्णन का सबसे सुंदर उदाहरण 'इन्दू' में प्रकाशित जयशंकर प्रसाद जी का प्राकृतिक सौंदर्य है । भूगोल, यात्रा, वातावरण, मौसम-ऋतु, मेले-तमाशे, पर्व-त्यौहार, सभा-सम्मेलन आदि विषयों पर बहुत अच्छे, वर्णनात्मक निबंध लिखे जा सकते हैं । भट्ट जी के - 'मेला-ठेला', 'दरिद्र की गृहस्थी', द्विवेदीजी का - 'प्रभात', माधव प्रसाद मिश्र का 'रामलीला' आदि अच्छे वर्णनात्मक निबंध है।

५) विवरणात्मक निबंध :

विवरण का अर्थ है - वृतान्ता, हाल या बयान । जिस निबंध में किसी वृतान्ता या घटना या वर्णन रहता है या विवेचन होता है उसे विवरणात्मक निबंध कहा जाता है । कथा-प्रधान इन निबंधों में घटनाओं का सुसम्बन्ध विवेचन होता है ।

व्यक्तित्त्व की छाप और आत्मीयता इस निबंध की प्रमुख विशेषता है । वर्णनात्मक निबंध में जहाँ स्थानगत वर्णन रहता है, वहाँ विवरणात्मक निबंध में कालगत । पहले में जहाँ स्थानगत वर्णन रहता है और अधिकतर क्रियाहीन पदार्थों का चित्रण रहता है, वहाँ इसमें क्रियाशीलता का । कथात्मकता (Narration) इसकी मुख्य विशेषता है ।

कथात्मकता, ऐतिहासिकता युक्त इन निबंधों में लेखक को वर्णनात्मक निबंध लेखक की अपेक्षा कठिनाई का सामना करना पड़ता है । कल्पना और अनुभूति के माध्यम से लेखक क्रियाशील व्यक्तियों के अन्त: बाह्य कार्य व्यापारों को पकड़ने का प्रयत्न करता है । इस प्रयत्न में उसे जितनी सफलता मिल सकती है वह उतना ही अधिक सफल विवरणात्मक निबंध लिख सकता है ।

शिकार, जीवनी, यात्राएँ, पर्वतारोहण युद्ध इत्यादि विषयक निबंध इसी श्रेणी में आते हैं । पौराणिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा धार्मिक सभी प्रकार के महापुरूषों का जीवन-विवरण इन निबंधों के माध्यम से सामने आया । घटनात्मक विवरणों में ऐतिहासिक, अलौकिक तथा सामान्य सभी प्रकार की घटनाओं का वर्णन हुआ है । भारतेन्दु का - 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न', सितारे हिन्द का - 'राजा भोज का सपना' आदि इस युग के निबंध उल्लेखनीय है । हिन्दी में विवरणात्मक निबंध लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, राहुल सांकृत्यायन, पं. श्रीराम शर्मा आदि के नाम लिये जा सकते हैं ।

ललित-निबंध :

हिन्दी गद्य साहित्य में निबंध का और एक नया रूप- 'ललित-निबंध' के नाम से जाना जाता है । इतना ही नहीं तो आज यह एक स्वतंत्र विधा के रूप में अपनी पहचान बना चुका है । ललित-निबंध व्यक्ति-प्रधान अथवा आत्मपरक लघु

गद्य खंड है, जिसमें काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है । कल्पना-प्रवणता, मन की उन्मुक्त भटकन, तल्लीनता स्वानुभूति प्रदर्शन, अपने भावनाओं की अभिव्यक्ति क्रम बद्धता एवं तारतम्यपूर्ण कथन, उन्मुक्त भटकन का आभास, कलापूर्ण काव्यात्मक गद्य शैली आदि ललित-निबंध की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं । फक्कड़पन या मन की मौज, सामान्य में विशिष्टता की तलाश ललित-निबंध की प्रमुख पहचान है ।

चिंतन और आत्मीयता के साथ संवेदनशील अभिव्यक्ति ही निबंध को ललित-निबंध बना देती है । शब्द, अर्थ, भाव और विचार सभी स्तरों पर लालित्य का संयोजन करनेवाले निबंध ही ललित-निबंध है । कुशल मूर्तिकार की तरह ललित निबंधकार प्रत्येक शब्द को सजा-सँवारकर अपने विशिष्ट सांस्कृतिक बोध के अनुरूप अपने भावों और विचारों को सम्प्रेषित करता है । ललित-निबंध बुद्धि को सोचने के लिए, मन को अनुभव करने के लिए बाध्य करते हैं । ललित-निबंध आत्मीयता की मानभावना रंगोली है । भावुक मन की अंतरंग पुकार है ।

व्यक्तिगत निबंधों में निबंधकार अपने विचारों और अनुभूतियों को निजी संस्पर्श के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति देता है । वह किसी भी विषय को अपने व्यक्तित्त्व का अविभाज्य अंश बनाकर स्वच्छन्द सृजन करता है । उसके लेखन में व्यक्तित्त्व की निजता, हृदय की अन्विति, भावनाओं की बरसात और शैली की स्वच्छन्दता होती है । ऐसे ही वैयक्तिक निबंध में जब लालित्य और सांस्कृतिक बोध के उपकरणों का समावेश हो जाता है, तब वे ललित-निबंध बन जाते हैं । ललित-निबंधों के कई गुण है, जिनमें रचना क्षमता, सहृदयता और रागात्मकता को प्रमुख माना जा सकता है ।

कुछ विद्वानोंने ललित-निबंध की परिभाषा इसप्रकार दी है -

१) डॉ. रमेश चन्द्र लवानिया :

"ललित-निबंध गद्य साहित्य की वह विधा हे, जिसमें निबंधकार किसी भी विषय को आधार बनाकर अपने व्यक्तित्त्व को स्वच्छन्द गति से ललित-शैली में अभिव्यक्ति प्रदान करता है ।"[१५]

२) कुबेरनाथ राय :

"विषय के आसपास शिव के सौद की भाँति मुक्त चरण और विचरण ललित-निबंध है ।"[१६]

३) डॉ. रमेश कुंतल मेघ :

"सर्जनात्मक साहित्य की जितनी विधियाँ हो सकती है । जिनमें सरसता और सौंदर्य होता है, वे सब ललित विशेषणयुक्त निबंध में स्थान पा जाती है ।"[१७]

४) डॉ. शंकर पुणताम्बेकर :

"वह मधुर साहित्य लेख जिसमें निबंध और कहानी का संकर हो । अर्थात कहानी सी रोचकता और निबंध की गंभीरता का मिला जुला रूप ।"[१८]

५) डॉ. मु.ब. शहा :

"व्यक्तिसापेक्षता, स्वच्छन्दता, वैचारिकता गुणों से संप्रक्त संक्षिप्त गद्य रचना को ललित निबंध कहा जा सकता है ।"[१९]

ललित-निबंध की उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम उसकी विशेषताएँ या निष्कर्ष इस प्रकार बता सकते है कि यह भावात्मक और विचारात्मक

अभिव्यक्ति है । यह आत्म-प्रस्तुति का स्वच्छन्द साधन है । यह अंतर्मुखी भावदशा की देन है, यह लालित्य का सृजन कर पाठको को विचार और अनुभव के नए संसार में रसमग्न कर देता है ।

ललित निबंधों के तत्त्व :

१) लालित्य :

लालित्य और सौंदर्य एक दूसरे के पर्याय है । आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने इन दोनों के बीच अंतर इसप्रकार बताया है - "एक प्राकृतिक सौंदर्य, दूसरा मानवीय इच्छाशक्ति का विलास है । लालित्य अर्थात प्राकृतिक सौंदर्य से भिन्न किन्तु उसके समानान्तर चलने वाला मानवरचित सौंदर्य है ।"[२०] ललित निबंधों में यही मानवरचित सौंदर्य विषयवस्तु, भावप्रवणता, बुद्धिविलास, कल्पना और भाषा सभी स्तरों पर मूर्त होता है ।

ललित निबंध की भाषा में सरलता, सरसता, चयन और विचलन की मनोहारी प्रस्तुति भाषिक लालित्य साकार करती है । ललित निबंधों का लालित्य इन सभी का समन्वित प्रभाव है ।

२) विषय-विस्तार :

ललित निबंध के लिए न तो विषय की सीमा होती है और न विषय वस्तु पर स्थिर रहना ललित निबंधकार की प्रकृति होती है । जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों और पदार्थों से लेकर मामूली से मामूली प्रसंगों और पदार्थों पर भी ललित निबंध लिखा सकता है । रास्ते में पड़े हुए आलपिन पर लिखा गया ललित निबंध भी जीवन के किसी विराट सत्य को उजागर कर सकता है । ललित निबंध का क्षेत्र अत्यंत

व्यापक और सीमाहीन होता है । एक ही विषय पर भिन्न ललित निबंधकारों के विचार विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं और उनका रसास्वादन भी अलग-अलग होता है ।

३) रागात्मकता :

ललित-निबंधों में लालित्य की पहचान भावाकुलता से ही होती है । इसी भावप्रवणता को सहृदयता और रागात्मकता भी कहा गया है । अपनी इसी रागात्मक वृत्तियों के सहारे ललित-निबंधकार आत्माभिव्यक्ति करता है । अपने अनुभवों और संवेदनाओं का सबको सहभागी बनाता है । ललित निबंध में कुछ भी गोपनीय या उपेक्षनीय नहीं रहता । ललित निबंधकार जो कुछ भी सोचता और महसूस करता है उसे पूरी रागात्मक सरसता के साथ प्रस्तुत करता है ।

४) स्वच्छन्दता :

स्वच्छन्दता का अर्थ वैचारिक और शिल्पगत स्वतंत्रता है । ललित निबंध स्वाधीन चिंतन और स्वच्छन्द शैली की उपज है । इसमें रचनाकार का मनमौजीपन व्यक्त होता है । एक विशिष्ट अनौपचारिक स्वच्छन्दता के साथ ललित-निबंधकार अपनी वैचारिक निजता और शिल्पगत मस्ती का परिचय देता है ।

५) सांस्कृतिकता :

ललित निबंधकार संस्कृति, का वाहक होता है । वह संस्कृति के सभी पहलुओं को अपने निबंध में चित्रित करता है । रचनाकार का सांस्कृतिक जुड़ाव ललित-निबंधों को सौष्ठव और विराटता प्रदान करता है । सांस्कृतिकता के स्पर्श से ललित निबंध में यथार्थ और कल्पना, अध्ययन और ओज, अनुभव, भान और भाषा सबको एक विशिष्ट लालित्य प्राप्त होता है ।

६) ललित शैली :

भाषा का प्रस्तुतीकरण ही शैली है । निबंधकार बोलचाल की भाषा में अपनी प्रतिभा, अनुभूति और संप्रेषण के द्वारा अपनी रचना को निखारता है, रूप देता है । ललित निबंधों की भाषा शब्द और अर्थ, भावाकुलता और पारदर्शिता तर्क और लय का ऐसा समन्वय होती है कि उसकी यह भाषिक विलक्षणता ही लालित्य का मूल आधार बन जाती है ।

ललित निबंधों की शैली का रचनातंत्र सरलता और सरसता, सजीवता और दीप्ति, ओज और स्वच्छन्दता से सजी-सँवरी भाषा का चमत्कार होता है ।

यह सारे तत्त्व निबंधों को ललित बनाते है । पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं । ललित निबंध कविता न होते हुए भी रागात्मक है । वह गद्यगीत न होते हुए भी भावुक हृदय की पहचान है । वह चित्रात्मक होते हुए भी रेखाचित्र नहीं है। वह विवरणात्मक होते हुए भी रिपोर्ताज नहीं है । वह फँटेसी न होते हुए भी कल्पना की उदात्त उड़ान है । वह व्यंग्य न होते हुए भी विनोद है । इन सबके समन्वय से ही वह ललित निबंध कहलाता है ।

निबंधों के मुख्य तत्त्व :

१) व्यक्ति-सापेक्षता :

साहित्य के सभी विधाओं में कम-अधिक मात्रा में लेखक का व्यक्तित्त्व विद्यमान रहता है । परन्तु निबंध में उसकी अन्विति सबसे अधिक होती है । व्यक्तित्त्व के दो पक्ष होते है । एक प्रकृत और दूसरा अर्जित । प्रकृत व्यक्तित्त्व जन्मत: प्राप्त होता है । अर्जित वह होता है जिसे व्यक्ति अध्ययन, मनन, चिन्तन द्वारा प्राप्त कर

लेता है या बनाता है । मनुष्य कभी भी प्रकृत अवस्था में नहीं रहा । सदा उसने अपने आप का परिष्कार किया है । अध्ययन, मनन, चिंतन के द्वारा अपने व्यक्तित्त्व को विशिष्ट बनाया है । निबंधों में भी दोनों प्रकार के व्यक्तियों का मिलाजुला रूप दिखाई देता है ।

निबंध में निबंधकार की आत्माभिव्यक्ति सरल, स्वाभाविक होती है । वह जीवन को खुली आँखोंसे देखता है, परखता है । अपने आस-पास के परिवेश का प्रभाव उसपर दिखाई देता है । निबंधकार अपने व्यक्तित्त्व के माध्यम से अपने समकालीन युग और परिस्थिति का अनुभूत चिंतन प्रस्तुत करता है । जिसका व्यक्तित्त्व गहरा है, विनोदी वृत्ति सरल है । अपने आस-पास के जीवन का शांत भाव से निरीक्षण कर सकता है और सोच-समझकर उसकी सुंदर अभिव्यक्ति कर सकता है वही सच्चा निबंधकार होता है ।

उसके निबंध में जीवन के प्रति जो गहरी संवेदना दिखाई देती है । वही उसका व्यक्तित्त्व होता है । निबंध में व्यक्तित्त्व की प्रमुखता को सभी विद्वानों ने मान्यता दी है । व्यक्तित्त्व की प्रधानता प्रतिपादित करते हुए आ. रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है - "आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्त्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो ।"[२१] बाबू गुलाबराय ने भी बहुत स्पष्ट शब्दों में निबंध में लेखक के व्यक्तित्त्व की महत्ता को दिखाया है - "निबंध में व्यक्तित्त्व छिपाया नहीं जा सकता । लेखक जो कुछ लिखता है, उसको अपने निजी मत के रूप में अथवा अपने निजी दृष्टिकोण से देखता है । उसके पीछे उसके निजी अनुभव की प्रेरणा दिखाई देती है ।"[२२]

२) स्वच्छन्दता :

साहित्य की सबसे अधिक स्वच्छन्द रचना निबंध है । निबंध का प्राण उसकी वैयक्तिकता है, और निबंध में स्वच्छन्दता इसी वैयक्तिकता के कारण आती है । निबंधकार की स्वच्छन्दता ही निबंध में रोचकता और जीवतंता लाती है । वहीं उसे रसवान बनाती है । स्वातंत्र्य का अर्थ जैसे स्वैराचार नहीं होता उसीप्रकार स्वच्छन्दता का अर्थ निरर्थक भटकन नहीं है । वह उद्देश्यपूर्ण होगी तभी सार्थक होगी ।

३) वैचारिकता :

निबंध को स्वच्छन्दता की सीमा में रखने का और उसे नियोजित रूप देने का कार्य वैचारिकता या बुद्धि के द्वारा ही किया जाता है । इसलिए इसे भी निबंध का आवश्यक तत्त्व मानना चाहिए ।

आ. रामचंद्र शुक्ल जब निबंध को गद्य की कसौटी कहते है तो उनका अभिप्राय केवल निबंध की भाषा पर या उसकी सरसता पर न होकर उसकी वैचारिक गहराई पर ही अधिक होता है । मन को एकाग्र कर के जब कोई निबंध लिखा जाता है तब वह विचारात्मक निबंध बन जाता है । वैचारिक निबंध पाठक की केवल ज्ञान की जिज्ञासा ही जागृत नहीं करते तो उसे अधिक परिष्कृत, सरस, तीव्र और सहज बनाते हैं ।

४) संक्षिप्तता :

छोटे-छोटे निबंध अधिकतर मन को आकर्षित कर लेते है । इसलिए निबंधों में संक्षिप्तता भी आवश्यक है । संक्षिप्तता निबंध की कसौटी इसलिए मानी गयी होगी कि कहीं वह अपने मूल विषय से हटकर बिखर न जाए । निबंध की सीमा

उतनी ही होनी चाहिए जिसमें वह अपने विषय को सुचारू ढंग से प्रस्तुत कर सके । कसावट, रसमयता और परिणाम की दृष्टि से निबंध की संक्षिप्तता आवश्यक है ।

हिन्दी निबंध का विकास :

हिन्दी-निबंध का विकास भारतेन्दु युग से ही माना जाता है । भारतेन्दु युग में नई चेतना जाग रही थी । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर पड़ा । उन्होंने गद्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । निबंध का उदय गद्य के विकास का ही परिणाम है । निबंध परंपरा का सूत्रपात भारतेन्दु युग में होने के कारण इसका प्रारंभ भारतेन्दु युग माना जाता है । हिन्दी निबंध के विकास के चार-चरण माने जाते हैं ।

१) भारतेन्दु युग

२) द्विवेदी युग

३) शुक्ल युग

४) शुक्लोत्तर युग (आधुनिक युग)

हिन्दी साहित्य के इतिहास में युग के नामकरण का आधार सामान्य तौर पर उन व्यक्तियों का साहित्यिक रूप रहा है । जिन्होंने साहित्य की धारा को गति या दिशा दी । साहित्य के भिन्न-भिन्न रूपों को सजाया-संवारा ।

१) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र :

भारतेन्दु अपने युग के श्रेष्ठ निबंधकार है । निबंध में वह चमकीला और प्राणवान व्यक्तित्त्व लेकर आए । भारतेन्दु के भावात्मक निबंधों में 'सूर्योदय', 'समर्पण', 'ईश्वर बड़ा विलक्षण है' आदि निबंध आते हैं । इनमें भी 'सूर्योदय' काफी

प्रसिद्ध है । उनके यात्रा-वर्णन पर लिखे गये निबंधों में उनका भावुक, श्रद्धावान तथा कलाप्रिय मन झलकता है । ऐसे स्थानों पर उनका मन रमता है । जैसे - ''अहा! इनके जन्म भी धन्य है जिनसे अर्थ विमुख जाता ही नहीं । फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी, और जड़ यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोरथ पूर्ण करते है ।''[२३]

छोटे-छोटे सजीव वाक्य, चलती हुई भाषा, वर्णित विषय के प्रति तन्मयता, रोचकता एवं प्रवाहमयता भारतेन्दु जी की शैली की विशेषता थी । 'काश्मिर कुसुम', 'बादशाह दर्पण', 'अकबर और औरंगजेब' आदि उनके निबंध इतिहास से संबंधित है । तो सुरदासजी का जीवन चरित्र, 'बीबी फातमा', 'श्री जयराम शास्त्री का जीवन चरित्र' आदि निबंध जीवनियों से संबंधित है । इनमें भावुकता और कल्पना की अधिकता है । जयदेव संबंधी निबंध में भी भावुकता मिलती है - ''जयदेव की कविता का अमृत-पान करके तृप्त चकित, मोहित कौन नहीं होता, और किस देश में कौनसा ऐसा विद्वान है जो कुछ भी संस्कृत जानता हो और जयदेवजी की काव्य-माधुरी का प्रेमी न हो । जयदेव का यह अभिमान कि अंगुर और उसकी मिठास उनकी कविता के आगे फीकी है, बहुत सत्य है ।''[२४]

भारतेन्दु जी के ऐतिहासिक निबंध विवरणात्मक शैली के उत्तम उदाहरण है । वे केवल ऐतिहासिक तथ्य नहीं देते, घटनाओं के वर्णन में अपनी मन की बात रागात्मकता में भी ढाल देते हैं, इसीलिए - 'बादशाह दर्पण' जैसा उनका निबंध मुस्लिम शासन पर बड़े तीव्र आघात करता है ।

'बसन्त', 'वर्षा-काल', 'लखनौ', 'हरिद्वार', 'ग्रीष्म ऋतु' आदि भारतेन्दु जी के वर्णन प्रधान निबंध है । इन निबंधों का मुख्य विषय प्रकृति वर्णन रहा है । इन

वर्णनों में केवल तथ्यों का चित्रण ही नहीं तो एक विचारशील और संवेदनायुक्त मन की तंरगें भी हैं । 'हरिद्वार' निबंध में वे उस पुण्यभूमि की सुंगधमय घास को देखकर भावुक भी हो उठते हैं - "मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है । यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है । निदान यहाँ जो कुछ है, अपूर्व है और यह भूमि साक्षात विरागमय साधुओं और विरक्तों के सेवन योग्य है, और संपादक महाशय में चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ और अपने वर्णन द्वारा आपके पाठकों को इस पुण्यभूमि का वृत्तान्त विदित करके मौनावलंबन करता हूँ ।"[२५]

उनके इन निबंधों द्वारा केवल स्थानों का ही परिचय नहीं मिलता, तो वस्तु, व्यक्ति समाज उनके आचार-विचार, रीति-निति आदि सभी बातों का वर्णन मिलता है । ये वर्णन तथ्यात्मक और कल्पनात्मक हास्य-प्रधान निबंधों का मूल उद्देश्य जहाँ पाठकों का केवल मनोरंजन करना ही होता है, वहाँ व्यंग्यप्रधान निबंधों का उद्देश्य व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राजनैतिक विद्रुपताओं को दिखाकर समाज को सुधार के पथ पर लाना होता है । निबंधों में शिष्ट हास्य और उत्तम व्यंग्य की स्थापना भारतेन्दु जी ने ही की ।

'ईश्वर बड़ा विलक्षण है', 'सच मत बोलो', 'उर्दू का स्थापा' आदि उनके निबंध हास्य-व्यंग्यात्मक है । भाषा की दृष्टि से तो उनका अपना एक अलग महत्त्वपूर्ण स्थान है । उन्होंने न अरबी-फारसी मिश्रित हिंदी का पक्ष लिया, न संस्कृत निष्ठ हिंदी का । भाषा का एक निखरा हुआ, जनप्रिय, सरल और सजीव रूप उन्होंने प्रस्थापित किया । उनके निबंध भारतेन्दु ग्रंथावली में संग्रहित है ।

२) बालकृष्ण भट्ट :

पं. बालकृष्ण भट्ट हिन्दी के श्रेष्ठ निबंधकार है । वे भारतेन्दु युग के प्रतिनिधि निबंधकार है । उनके निबंध जीवन के संघर्षों से निखरकर आये हैं । उन्होंने अपने अध्ययन, व्यापक ज्ञान एवं परिपक्व अनुभवों को अपने निबंधों में उतारा है ।

भावात्मक शैली का जो स्तर भारतेन्दु जी में था, उसी स्तर के कुछ निबंध भट्ट जी ने भी लिखे है । उनका - 'चन्द्रोदय' निबंध भारतेन्दु के - 'सूर्योदय' निबंध के समान ही है । उनका 'आँसू' निबंध आवेगमय और सरल भाषा का उदाहरण है । ''बहुधा आँसू का गिरना भलाई और तारीफ में दाखिल है । हमारे लिए आँसू बड़ी बला है । नजले का जोर है, दिन रात आँखों आँसू टपकता है । ज्यों-ज्यों आँसू गिरता है, त्यों-त्यों बिनाई कम होती जाती है । सैंकड़ो तदबीर कर चुके, आँसू का टपकना बन्द न हुआ । क्या जाने बंगाल की खाड़ीवाला समुद्र हमारे ही कपार में आकर भर रहा है ।''[२६]

बालकृष्ण भट्ट जी का अधिकांश निबंध साहित्य विचार-प्रधान ही है । वे संस्कृत के प्रगाढ़ पंडित थे । उनका जीवन अध्ययन-अध्यापन में ही बीता । अध्ययन और मनन के प्रभाव में ही उनके निबंध फलते-फूलते गये । उनके निबंधों में बुद्धि और हृदय का संयोग मिलता है । अपने कथन को स्पष्ट करने के लिए वे क्रमबद्ध विचार प्रतिपादित करते हैं । उदा. 'आशा' निबंध में वे लिखते हैं - ''आशा को यदि मनुष्य के जीवन में जीवन-रूपी नौका भी लंगर कहें तो ठीक होगा, क्योंकि जैसे बड़े से बड़े तूफान में जहाज लंगर के सहारे स्थिर और सुरक्षित रहता है, वैसे मनुष्य भी अपने जीवन में घोर विपदाओं को झेलता हुआ आशा के सहारे स्थिर और निश्चल बना रहता है ...।''[२७]

बाल विवाह, जातियता, हिन्दुस्थान के रईस' जैसे अनेक विषयों पर लिखे उनके निबंधों से स्पष्ट है कि वे सामाजिक जीवन में सुधार लाना चाहते थे। साथ ही उन्होंने महापुरूषों के जीवन पर भी निबंध लिखे। वे चाहते थे कि इन लोगों के जीवन से एक नयी प्रेरणा और सजगता समाज को मिले। उनके जीवनीपरक दो ही निबंध है - शंकराचार्य और गुरूनानक देव। इन दोनों में विचारों की प्रधानता अधिक है।

बालकृष्ण भट्ट को उनके निबंधों के कारण ही अपने समय का दृष्टा कहा गया। राष्ट्रीय शोषण के विरूद्ध उनके मन में लगातार आक्रोश उमड़ता था। अंग्रेजों का अन्याय उनसे सहन नहीं होता था। उन्होंने लिखा है - "नोन पर कर लगे, दाल पर कर लगे, चावल पर कर लगे, खाने के अन्न पर कर लगे, खेत पर कर लगे, खलिहान पर कर लगे, जहाँ तक चाहे कर बढ़ाते जाये, कोई हाथ पकड़ने वाला हीं नहीं है।"[२८]

उनके सामाजिक निबंधों से स्पष्ट होता है कि वे सामाजिक कुरीतियों के घोर विरोधी थे। इसीकारण उन्होंने अनेक सामाजिक समस्याओं पर विस्तार से लिखा है। संयुक्त परिवार प्रणाली के दोषों का वर्णन करते हुए, वे कहते हैं - "थोड़े ही दिन तक रहने के उपरान्त इन एकांत भोगियों में ऐसा वैमनस्य फैलता है कि आपस में एक को दूसरे का मुंह देखना भी रवा नहीं होता। और अंत में हिस्सा बंट के कारण एक-एक इंच जमीन के लिए लड़कर वकील मुख्तार और अदालत का खातिरवाह पेट भरते है।"[२९]

भट्टजी ने जीवन के विभिन्न पक्षों और समाज की समस्याओं को अपने निबंधों का व्यापक रूप से विषय बनाया है, जिसमें मध्यमवर्गीय पढ़े-लिखे लोगों पर

भी व्यंग्य किया गया है । इन निबंधों में - 'इंगलिश पढ़े तो बाबू होय', 'मेला-ठेला', 'आत्म-निर्भरता', 'आशा' आदि निबंधों के नाम लिये जा सकते हैं । उनकी भाषा में उर्दू और फारसी के शब्द आसानी से आ जाते हैं । जैसे- नाज-नखरा, जाहिर, दास्तान, ख्वाब, हकीकत, अलबत्ता, तनहा, उम्मीद जैसे अनेक शब्दों का प्रयोग उनके निबंध में देखे जा सकते हैं ।

भट्ट जी ने कुछ व्यंग्य-प्रधान निबंध भी लिखे हैं । व्यंग्य द्वारा उन्होंने सामाजिक, कुरीतियों पर प्रहार किये हैं । उनके निबंधों में व्यंग्य-विनोद के प्रसंग अपने पूरे प्रभाव के साथ दिखायी देते हैं । इससे निबंधों की रोचकता बढ़ गयी है । उनके व्यंग्य बहुत ही मार्मिक है । उसका एक उदाहरण इसप्रकार है - ''बाज-बाज नौसिखिये नई रोशनीवाले, जिनका किया धरा आज तक कुछ नहीं हुआ, मुल्क की तरक्की में खब्त में आप आज इस सभा में जाए हड़ाकू मचाया, कल उस क्लब में जाए टाय-टाय कर आये, दिल बहलाव हो गया । इन्हीं में से कोई घाऊघप्प गुरूघंटाल किसी क्लब या समाज के सेक्रेटरी या खजानची बन बैठे और सैंकड़ों रूपया वसूल कर डकारने लगे । भांडों की नकल, सवारी की सवारी, जनाना साथ आमदनी की आमदनी, दिल बदलाव मुफ्त में ...।''[३०]

भट्ट जी की भाषा में अलंकारों का भी आकर्षक प्रयोग मिलता है । काव्यात्मक भाषा का मुख्य आकर्षण, अलंकारिता ही है जो उनके भावात्मक निबंधों का 'प्राण उत्प्रेक्षा' का एक उदाहरण इसप्रकार है - ''मानो कर्कश के समान पश्चिम दिशा सूर्य के प्रचंड ताप से दु:खी हो क्रोध में आ इसी हंसिया को लेकर दोड़ रही हो।''[३१]

उनके निबंधों के शीर्षक भी कहावतों या मुहावरों पर आधारित है । कभी-कभी सिद्धान्तों के आधार पर भी उन्होंने अपने निबंध का शीर्षक रखा है - जैसे

साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है, संसार कभी एक सा न रहा, मनुष्य की बाहरी आकृति मन की प्रतिकृति है, इसीप्रकार काम और नाम दोनों साथ-साथ चलते हैं आदि । बात शीर्षक निबंध के एक उद्धरण में मुहावरें का प्रयोग देखिए - "बात हमारी बात है । हमारे देश की बात है । बात संसार की बड़ी बात है । जिसकी, बात है उसकी क्या बात? जिसकी बात नहीं, उसकी क्या बात । ईश्वर करें बात सबकी बनी रहे । बात गये बात नहीं मिलती ।"[३२]

बालकृष्ण भट्ट के निबंधों में विचार और भाव शिल्प और भाषा से जुड़कर प्रभावपूर्ण हो जाते हैं । उनकी शैली में विविधता है, उनके मुहावरें बातचीत का रूप धारण कर लेते हैं ।

बालकृष्ण भट्ट का निबंध लेखन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है । उन्होंने अपने निबंध रचना के माध्यम से एक नया भाषा संस्कार रचने की कोशिश की है । उनके निबंधों में गद्य का एक विशिष्ट रूप मिलता है यही कारण है कि भारतेन्दु युग के निबंधकारों में भट्टजी के निबंधों को विशेष महत्त्व प्राप्त होता है । और इस युग के निबंधकारों में उनकी अपनी एक अलग पहचान है । छोटे-छोटे और संयत वाक्यों में उन्होंने अपने भाव प्रकट किये है । उनके निबंध उनके आंतरिक भावों के सच्चे प्रतिरूप है । उनमें उनका जीवन झलकता है । शब्द-चयन उनका बड़ा ही सुरूचिपूर्ण है ।

प्रताप नारायण मिश्र :

प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दु युग के बालकृष भट्ट के बाद एक महत्त्वपूर्ण निबंधकार है । उन्होंने ब्राम्हण पत्र का अनेक वर्षों तक संपादन किया । उनके निबंध संकलनों में निबंध नवनीत, प्रताप पीयूष तथा प्रताप नारायण ग्रंथावली महत्त्वपूर्ण है । वे मूलत: निबंधकार होने के साथ ही पत्रकार भी थे । इसीकारण उन्होंने

अपने निबंधों के माध्यम से अपने आपको सामाजिक जागरण से भी जोड़ा । उनके व्यक्तित्त्व की छाप उनके निबंधों में भी पायी जाती है ।

मिश्र जी ने साहित्य निर्माण, समाजसेवा तथा देशहित को अपने निबंधों का लक्ष्य बनाया । उन्होंने जीवन से जुड़े हुए सामान्य विषयों पर भी निबंध लिखे । उनमें देश और जाति के प्रति प्रेम की भावना थी इसीलिए उन्होंने अपने राजनीतिक निबंधों में अंग्रेज सरकार की नीतियों की आलोचना की है । उनके निबंधों में कोरी भावुकता नहीं है और न ही कल्पना की उड़ान है । वे अनुभूति की गहराई और आत्मीयता के साथ लिखते हैं ।

मिश्र जी के विचारात्मत निबंधों में नास्तिक, ईश्वर की मुर्ति, भावात्मक निबंधों में लोकलज्जा और वर्णनात्मक निबंधों में धरती माता जैसे निबंध उल्लेखनीय हैं । उन्होंने भावात्मक शैली में अनेक निबंध लिखे । इन निबंधों में भावों का आवेग कुछ अधिक ही दिखाई देता है । जैसे - भारतेन्दु के देहावसान पर लिखा गया उनका 'रक्ताश्रृ' निबंध -

''हाय! हृदय विर्दीण हुआ जाता है । आँसू रूकते ही नहीं । हाय हाय सुनने से पहले ही हमारा निर्लज्ज शरीर क्यों न छूट गया । हाय, पापी प्राण तुम क्यों न निकल गये । हाय, इस अधम जीवन का अन्त क्यों न हो गया । हाय आशा की जड़ कट गयी । बस, अब क्या है...।''[३३]

भारतेन्दु युग से सभी निबंधकारों के समान उनके निबंध हास्य और व्यंग्य से भरे हैं । जैसे - 'घात', 'धोखा', 'आप', और 'जवानी की सैर' जैसे अनेक निबंध है । आत्मपरकता के साथ वे उद्देश्य प्रधान भी है । मनोरंजन के साथ-साथ चिंतन और जन जागरण की भावना भी उनके निबंधों में विस्तृत रूप से दिखायी देती

है । उनके निबंधों में व्यंग्य का गहरा पुट है उसका एक उदाहरण इसप्रकार है - "घर की मेहरिया कहा नहीं मानती, चले है दुनिया भर को उपदेश देने, घर में एक गाय नहीं बांधी जाती, गौ रक्षिणी सभा स्थापित करेंगे, तन पर एक सूती देशी कपड़े का वस्त्र नहीं है, बने है देश हितैषी, साढ़े तीन हाथ का अपना शरीर है, उसकी उन्नति नहीं कर सकते, देशोन्नति पर मरे जाते है- कहां तक कहिए हमारे नौसिखिया भाईयों को 'मालि खूलिया' का आजार हो गया । करते-करते कुछ भी नहीं है, बक-बक नाधे है ।"[३४]

मिश्र जी के निबंधों की भाषा विषयानुकूल अत्यंत सरल है । वह लोक-प्रचलित शब्दावली, मुहावरेदार भाषा है । उनकी भाषा के संदर्भ में पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने एक जगह कहा है - "अहा! भाषा हो तो ऐसी हो, क्या प्रवाह है? क्या लोच! कैसी फड़कती और चलती भाषा है । दु:ख है यह भाषा पंडित जी के साथ चली गई, फिर ऐसी भाषा लिखने वाला कोई उत्पन्न न हुआ । मुहावरेदार भाषा लिखने में जैसा भाव-विकास होता है, वैसा अन्य भाषा लिखने में नहीं । यदि होता भी है तो उतना प्रभावजनक नहीं होता ।"[३५]

मिश्र जी के निबंध शैली का विकास 'धोखा', 'पंच-परमेश्वर', 'मनोयोग' जैसी रचनाओं में देखा जा सकता है । वे धोखा निबंध में कहते हैं कि हम नहीं जानते कि धोखे को लोग बूरा क्यों कहते हैं । कितनी आकर्षक शैली में वे कहते हैं - "धोखा खाने वाला मूर्ख और धोखा देनेवाला ठग क्यों कहलाता है । जब सब कुछ धोखा ही धोखा है । और धोखे से अलग रहना ईश्वर की सामर्थ्य से भी दूर है तथा धोखे ही के कारण संसार का चर्खा पिन्न-पिन्न चला आता है नहीं तो ढिचर-ढिचर होने लगता बस रह ही न जाए .... साधरणत: जो धोखा खाता है वह अपना कुछ न कुछ गंवा बैठता है और धोखा देता है उसकी एक न एक दिन कलई खुले बिना नहीं रहती है और हानि सहना व प्रतिष्ठा खोना दोनों में हो ही जाया करती है ।"[३६]

मिश्र जी भाषा में कहावतों की भरमार दिखायी देती है । हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और, जैसे प्रयोग भी मिलते हैं । छाती ठोंकता आपे से बाहर होना, कलई खुल्ला आदि अनेक मुहावरें मिलते हैं उनकी भाषा में उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है । जैसे - पोषाक, हुनर, आर्टिकल, कमीशन, एडीटर इ. ।

प्रतापनारायण मिश्र जी ने कहीं-कहीं पर विवचेनात्मक शैली को भी भावात्मक बना दिया है । उन्होंने सामाजिक बूराईयों पर व्यंग्य किया है । उन्होंने अपनी शैली में मधुरता, व्यंग्य और विवेचन तीनों का समावेश किया है । वे मानते हैं कि खुशामद वह चीज है जो पत्थर को मोम बना देती है । उनकी भाषा स्वच्छ ओर सुसंस्कृत है, आकर्षक और लोकप्रिय है । उनकी शैली की विशेषताओं के संदर्भ में श्री जयनाथ नलिन जी ने लिखा है - "आत्मीयता, आकार-संकोच, भाषा का चटपटापन, उछलता उमंग भरा व्यक्तित्त्व जबान का फक्कड़पन और तेज, उक्ति चमत्कार और व्यंग्य की बौछार आदि विशेषताएँ मिश्र जी को शक्तिशाली निबंधकार प्रमाणित करती है ।"[३७]

मिश्र जी भारतेन्दु युग के श्रेष्ठ निबंधकार है । उनका निबंधकार के रूप में उभरा व्यक्तित्त्व उस युग के अन्य निबंधकारों में अलग ही पहचान रखता है ।

४) बालमुकुन्द गुप्त :

बालमुकुन्द गुप्त भारतेन्दु युगीन श्रेष्ठ निबंधकार है । उनका नाम बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र के साथ लिया जाता है । वे भी पत्रकार थे और उन्होंने हिन्दी बंगवासी तथा भारत मित्र नामक हिन्दी पत्रों का संपादन किया । शिवशंभू के चिट्ठे, चिट्ठे और खत तथा गुप्त-निबन्धावली उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं ।

भारतन्दु के बाद बालमुकुन्द गुप्तजी ने इस युग की सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों को जीवित रखा ।

देशभक्ति और हिन्दी प्रेम उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ थी । गुप्त जी के निबंधों में उनका सरल स्वभाव, निर्भिक, साहसी मन, विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्तित्त्व दिखाई देता है । गुप्त जी के व्यक्तित्त्व में भाव-प्रयणता अधिक थी । उनके अधिकांश निबंधों में शायद इसीलिए वैचारिक गम्भीरता कम, तरल भावुकता अधिक दिखायी देती है ।

उन्होंने व्यापक स्तर पर विचारात्मक और भावात्मक निबंध भी लिखे हैं । 'आत्माराम' नाम से उन्होंने आलोचनात्मक निबंधों की रचना की है । तो शिवशंभू शर्मा के नाम से व्यंग्यात्मक निबंध भी लिखे हैं । उन्होंने चिट्ठे और खत शैली का प्रयोग किया है । उसका एक उदाहरण इसप्रकार है -"तीसरे पहर का समय था । दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा था और सामने से संध्याफुर्ती के साथ पांव बढ़ाये चली जाती थी । शर्मा महाराज बूटी की धुन में लगे हुए थे । सिलबट्टे से भंग रगड़ी जा रही थी। मिर्च-मसाला साफ हो रहा था । बादाम इलायची के छिल्के उतारे जाते थे । नागपुरी नारंगियों को छील-छील कर रस निकाला जाता था । इतने में देखा कि बादल उमड़ रहे हैं ।"[३८]

छोटे-छोटे वाक्य, मुहावरों-कहावतों से युक्त भाषा, सुस्पष्ट विचार, व्यंग्य और विनोद का प्रयोग, उचित शब्दों का चयन गुप्तजी की शैली की मुख्य विशेषताएँ थी । उनके निबंधों की भाषा में ओज और प्रवाह मिलता है ।

हिन्दी भाषा की भूमिका में उन्होंने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी भाषा के विकास के लिए खुले मन से महत्त्वपूर्ण व्यक्ति माना है । भारतेन्दु युगीन

निबंधकारों की तरह उनके निबंध की भाष में अनेक भाषाओं के शब्द है । जिसमें अरबी, फारसी और अंग्रेजी का भी समावेश है । उनकी भाषा व्यंग्य प्रधान है । वे हँसकर अपनी बात समझाते है । कही-कही सांस्कृतिक गंभीरता, कथात्मकता और भावात्मकता भी उनके निबंधों में दिखायी देती है । उनके एक निबंध में कृष्ण जन्म का दृश्य इसप्रकार अंकित है - ''एक दिन ऐसी ही काली रात थी । इससे भी घोर अंधेरी भादो कृष्ण-अष्टमी की अर्द्धरात्रि, चारों और घोर अंधकार वर्षा होती थी, बिजली कौंध रही थी ? घन गरजते थे । यमुना उत्पल तरंगों में वह रही थी । ऐसे समय में एक दृढ़ पुरूष एक नवजात शिशू को गोद में लिए मथुरा के कारागार से बाहर निकल रहा था ।''[३९]

गुप्तजी के सभी निबंधों में भाव और विचारों का सुंदर समन्वय दिखायी देता है । विषय प्रतिपादन की शैली, व्यंग्य और अनेक व्यक्तित्त्व की छाप उनके निबंधों की केन्द्रीय विशेषताएँ है । वे बोलचाल की व्यावहारिक भाषा के प्रति आग्रही थे । भाषा के विषय में उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि - ''हमारे लिए इस समय वही हिन्दी अधिक उपकारी है, जिसे हिन्दी बोलनेवाले तो समझ सकें उनके सिवा उन प्रांतों के लोग भी उसे कुछ-न-कुछ समझ सकें, जिनमें वह नहीं बोली जाती । हिन्दी के संस्कृत के सरल-सरल शब्द अवश्य अधिक होने चाहिए, इससे हमारी मूल भाषा संस्कृत का उपकार होगा और गुजराती, बंगाली मराठी आदि भी हमारी भाषा को समझने योग्य होगी । किसी देश की भाषा उस समय तक काम की नहीं होती, जब तक उस देश की मूल भाषा के शब्द बहुतायत के साथ शामिल नहीं होते ।''[४०]

भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकार बालमुकुन्द गुप्त जी है । उनकी साहित्य और सामाजिक प्रवृत्तियाँ उस युग का दर्पण है । हर युग का भी अपना एक

व्यक्तित्त्व होता है । परकीय सत्ता के प्रति क्रोध, स्वजाति के लिए आन्तरिक कामना इस युग विशेषताएँ रही । इस युग के सभी निबंधकार पत्रकार थे इसलिए वे अपने पाठकों के साथ निकट का संबंध स्थापित करना चाहते थे । इस दृष्टि से यह निबंध साहित्य जीवन के अधिक नजदीक था ।

भारतेन्दु युग में निबंध साहित्य का विकास हुआ । सभी निबंधकारों ने राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में अपना योगदान दिया । व्यंग्य और विनोद के माध्यम से सामाजिक सुधार को समाज के विभिन्न वर्गों तक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया । इस युग के निबंधकारों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र और बालमुकुन्द गुप्त जी का योगदान सराहनीय रहा ।

द्विवेदी युग :

गद्य को व्यवस्थित, परिमार्जित करने का काम पं. महावीर प्रसाद द्विवेदीजी ने किया । भारतेन्दुजी के बाद पं. द्विवेदी जी महान साहित्यकार हुए कि उनके नाम पर ही पूरे युग का नामकरण किया गया । उन्होंने हिन्दी भाषा को निखारने में अमूल्य योगदान दिया । वे प्रमुख रूप से संपादक भाषा सुधारक और आलोचक थे उनके निबंधों पर उनके इसी रूप का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है ।

१) पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी :

उन्होंने सरस्वती पत्रिका का संपादन किया । हिन्दी भाषा की उन्नति और प्रगति के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहे । उनके अधिकांश निबंध भाषा के परिश्रम पर ही है । हिन्दी भाषा में शब्द-समूह की बड़ी समस्या थी, भावों और विषयों को अभिव्यक्त करने के लिए । द्विवेदीजी ने अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करके हिन्दी को व्यापक बनाया । उन्होंने केवल अंग्रेजी और उर्दू भाषा से ही शब्द ग्रहण नहीं किये तो

मराठी और बंगला भाषा से भी शब्दों को ग्रहण किया । भाषा के संबंध में एक निबंध में उन्होंने लिखा है - ''कविता लिखने में व्याकरण के नियमों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए । शुद्ध भाषा का जितना मान होता है, अशुद्ध का नहीं होता । जहाँ तक संभव हो शब्दों का मूल रूप नहीं बिगाड़ना चाहिए । मुहावरों का भी विचार रखना चाहिए । वे मुहावरा भाषा अच्छी नहीं लगती ।''[४१]

'साहित्य-सीकर', 'साहित्य-संदर्भ', 'विचार विमर्श' आदि द्विवेदी जी के प्रकाशित निबंध संकलन है । भाषा को सजाना, निखारना तथा विविध विषयों पर अपने विचारों को व्यक्त करना उनके निबंधों की विशेषता रही है । उनके निबंधों की संख्या लगभग ३०० है । 'रसज्ञ-रंजन' उत्तम साहित्यिक निबंध संग्रह है । जिसमें कवि और कविता जैसे निबंध संग्रहित है । द्विवेदी जी ने 'मिर्जा-गालिब', 'महात्मा बुद्ध', 'भीष्म पितामह', 'शंकराचार्य' जैसे महापुरूषों पर भी निबंध लिखे हैं ।

द्विवेदी जी ने भारत के पुराने खंडहर और भारतीय शिल्प-शास्त्र जैसे निबंध भी लिखे हैं । उन्होंने वस्तुओं का वर्णन अनेक शैलियों में किया है । उन्होंने कही यात्रा-शैली तो कही कथा शैली का भी प्रयोग किया है । उनके अनेक निबंध कवित्त्व प्रधान भी है; जिसमें महाकवि माह का प्रताप वर्णन, साहित्य की महत्ता और कालिदास के समय का भारत प्रमुख है । उनके एक निबंध का अंश इसप्रकार है - ''वार्ड साहब कई साल से अपने बगीचे में देख रहे थे कि एक नियत समय पर बहुत-सी मक्खियाँ इतनी अधिक हो जाती है कि इनसे बगीचे के प्राय: सभी पेड़-पौधें ढंक जाते हैं । साहब इनकी बढ़ती पर बड़े चकित हुये । वे अनुसंधान करने लगे कि एकाएक ये मक्खियाँ इसी समय यहाँ कैसे आ पहुँचती है और इनकी इतनी अधिक वृद्धि इतनी जल्दी कैसे हो जाती है ?''[४२] इनमें लक्षणा की सहजता से अभिव्यक्ति हुई है । प्राचीन वस्तुओं

का वर्णन करते हुए वे संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं । अपने निबंधों में द्विवेदीजी ने स्थलों का और लोगों का वर्णन करते हुए छोटे-छोटे और सरल वाक्यों का प्रयोग किया है जिससे कि पढ़ते समय हमारे सामने यथातथ्य वर्णन दिख पड़ता है । यथा एक चित्र इसप्रकार है - ''यहाँ के पण्डे चौबे है । ये लोग बड़े हष्ट-पुष्ट, देखने में सुश्रीक और स्वभाव के बड़े मधुर एवं मिलनसार होते हैं । कटुवचन कहना वा उदास होना ये जानते ही नहीं । लड्डू-पेड़े के प्रेमी और विजया के पूर्ण भक्त है । दण्ड पेलना, कुश्ती करना, यहीं इनका नित्यकर्म है । 'जै-जमुना मैया की' इसी पर चारों वेदों की सुभाषित है । लिखना पढ़ना बिलकुल नहीं जानते । खाना खूब जानते हैं । एक चौबे का चार-पाँच सेर लड्डू खाना और आध मन दूध पीना कोई बड़ी बात नहीं।''[४३]

द्विवेदी जी का सृजन शिल्प विविधता से भरा हुआ है । अपने साहित्य में उन्होंने मुहावरों का उचित एवं संतुलित प्रयोग किया है । उनके निबंधों में कहीं-कहीं व्यंग्य विनोद भी दिखायी देता है । हास्य-व्यंग्य का एक उदाहरण इसप्रकार है - ''चेयरमैन आप केवल इसलिए हुए है कि अपनी कारगुजारी गव्हर्नमेंट को दिखाकर रायबहादुर बन जाये और खुशामदियों से आप चौंसठ घड़ी घिरे रहे ।''[४४]

उनके साहित्य में भारतेन्दु युग की भावात्मकता और रामचन्द्र शुक्ल की विचारात्मकता का समन्वय मिलता है । सामाजिक समस्या का चित्रण उन्होंने मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया है । जैसे - ''सन्तोष निरोगता का लक्षण है, लोभ बीमारी का लक्षण है ।'' एक जगह पर द्विवेदीजी के संबंध में आ. शुक्ल जी कहते हैं, - ''उनके लेखों में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग अधिक मिलता है । नपे तुले वाक्यों को कई बार शब्दों के कुछ हेर-फेर के साथ कहने का ढंग वहीं है जो वाद या संवाद

में बहुत शान्त होकर समझाने-बुझाने के काम में लाया जाता है । उनकी यह व्यास शैली-विपक्षी को कायल करने के प्रयत्न में बड़े काम की है ।''[४५]

महावीर प्रसाद द्विवेदी अपने युग के केन्द्र में रहे हैं । भाषा को सहज और सरल बनाने में उनका व्यापक योगदान रहा है । उन्होंने अपने युग के ही नहीं तो बाद के निबंधकारों को भी प्रभावित किया है । मैथिली शरण गुप्तजी को 'साकेत' लिखने की प्रेरणा द्विवेदीजी से ही प्राप्त हुई थी । उन्हें अपने युग का प्रवर्तक माना जाता है ।

समग्र रूप से हम डॉ. जयनाथ नलिन के शब्दों में इसप्रकार कह सकते हैं कि - ''द्विवेदी जी की भाषा में न तो वक्रता है, न चमत्कार, चुटिला व्यंग्य तो खोजने पर मिल जाएगा, व्यंग्यात्मक अर्थ-विस्तार नहीं । कसाव भी कम है । पर भाषा अत्यंत प्रभावशाली, स्वच्छ गतिशील, चलती हुई सार्थक और शक्ति-सम्पन्न है । अभिव्यंजना की स्वाभाविक शक्ति उसमें है । वह भावों का प्रकाशन प्रसन्न सरलता से करती है बोझ मानकर नहीं । अर्थ का दुराव द्विवेदी जी की भाष में तलाश करने पर भी नहीं मिलता उनकी भाषा के राजपथ पर चलते हुए पाठक अर्थ फल का रस बराबर लेते चलता है । वह ऊबड़-खाबड़ न कठोर, न बुद्धि क पैर छीलते वाली, न दुर्गम ।''[४६]

२) श्यामसुन्दर दास :

बाबू श्यामसुन्दर दास द्विवेदी युग के एक उल्लेखनीय निबंधकार है । इन्होंने हिंदी भाषा को वैज्ञानिक, समृद्ध और सर्वसामान्य के अनुकूल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । उन्होंने निबंधकार, संपादक और समीक्षक के रूप में भी अपनी पहचान बनायी । इनके निबंधों में विचारों की गंभीरता है । हिन्दी साहित्य

निर्माता, भाषा रहस्य और रूपक इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं । इसके अलावा साहित्यालोचन इनका एक प्रसिद्ध ग्रंथ है ।

श्यामसुन्दर दास के निबंध विचारात्मक एवं विश्लेषणात्मक है । साहित्यिक लेखों में इनके निबंध संकलित है । 'समाज और साहित्य', 'भारतीय साहित्य की विशेषताएँ', 'कर्तव्य और सत्यता', 'तुलसीदास', 'सुरदास' आदि ऐसे निबंध है जो बाबू श्यामसुन्दर दास के निबंधकार व्यक्तित्त्व की पूरी पहचान कराते हैं।

उन्होंने सभी निबंध साहित्यिक विषयों को लेकर लिखे हैं । उन्होंने अपने निबंधों में विवेचनात्मक और प्रसाद इन दो शैलियों का प्रयोग किया है । एक उदाहरण इसप्रकार है - ''समस्त भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता, उसके मूल में स्थित समन्वय की भावना है । उसकी यह विशेषता इतनी प्रमुख तथा मार्मिक है कि केवल इसी के बल पर संसार के अन्य साहित्यों के सामने वह अपनी मौलिकता की पताका फहरा सकता है । और अपने स्वतंत्र अस्तित्त्व की सार्थकता प्रमाणित कर सकता है ।''[४७]

इसमें बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग दिखायी देता है । आसानी से विचार और कथन समझ में आ जाते हैं यहीं इसका आकर्षण है । उन्होंने अपने निबंधों में तत्सम शब्दों के साथ-साथ विदेशी और ऊर्दू के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया है । कहीं-कहीं साहित्यिक हिंदी का प्रयोग करने के कारण उनकी भाषा में गंभीरता भी झलकती है ।

श्यामसुंदर दास की सृजनशैली का आधार व्याख्यापरख भी है । उसमें गहराई न होते हुए भी यथार्थता है । जिससे उनका व्यक्तित्त्व उनके शिल्प पर अपना प्रभाव डालता है । ये द्विवेदी जी के सच्चे अनुगामी थे । आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

हिंदी के पथ प्रदर्शक और नेता थे श्यामसुंदर दास उनके अनुशासन में रहनेवाले स्वयंसवेक । इसीलिए उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा को जन्म दिया, सरस्वती का संपादन किया ।

श्यामसुंदर दास निबंधकार होते हुए भी आलोचक और भाषा विज्ञानी भी है । यही कारण है कि उनके निबंधों में साहित्य और भाषा के अनुशासन का प्रभाव मिलता है । उनमें विविधता नहीं है, एकरूपता है । उनके शब्दों में फैलाव है । द्विवेदी युगीन निबंधकारों में श्यामसुंदर दास का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

३) सरदार पूर्णसिंह अध्यापक :

सरदार पूर्णसिंह अध्यापक थे । निबंधों में उनका यह अध्यापक आद्योपन्त उपस्थित रहा । पूर्णसिंह का व्यक्तित्त्व अद्‌भुत था । प्रतिभाशाली विद्वान के रूप में उनकी कीर्ति थी । वे स्वच्छंद और फक्कड़ स्वभाव के थे । वे एक अच्छे वक्ता थे । स्वामी रामतीर्थ के अध्यात्मिक विचारों का उनपर अत्याधिक प्रभाव था । वे अत्यंत भावुक स्वभाव के थे । उसी भावुकता ने उन्हें सामान्य सांसरिक जीवन से विश्वस्त तथा मानवता पर श्रद्धा, विश्वास और स्नेह करनेवाला बना दिया था । देशभक्त, कवि, धर्मद्रष्टा उनके जीवन के विविध पहलू हमें उनके निबंधों में दिखाई देते हैं ।

अध्यापक पूर्णसिंह महत्त्वपूर्ण निबंधकार है । उन्होंने बहुत कम निबंध लिखे है । उन्होंने केवल सात निबंध लिखे हैं । और इन्हीं निबंधों के कारण उन्हें निबंधोंकारों की पंक्ति में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है । उनके निबंध इसप्रकार है - सच्ची वीरता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, अमेरिका का मस्त योगी वॉल्ट व्हिट मैन, कन्यादान, पवित्रता, ब्रम्हक्रांति । उनके निबंधों में भाव और विचारों का अद्‌भूत सामंजस्य दिखायी देता है ।

'कन्यादान' निबंध का प्रकाशन १९०९ में सरस्वती में हुआ था। वे कन्यादान को धार्मिक अनुष्ठान और अध्यात्मिक कार्य मानते थे। विवाह केवल सामाजिक समझौता नहीं है। आधुनिक सभ्यता की झूठी चकाचौंध पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये हैं। आचरण की सभ्यता में आचरण का महत्त्व प्रतिपादित किया गय है। मनुष्य सभ्य आचरण की प्राप्ति के लिए लगातार कोशिश करता है। यह सभ्यता उसके व्यक्तिगत जीवन के लिए ही नहीं तो राष्ट्र के उन्नति के लिए भी आवश्यक है। भारत की बहुमूखी उन्नति के लिए आचरण की सभ्यता को नकारा नहीं जा सकता।

पूर्णसिंह ने मुख्यत: भावात्मक शैली में ही निबंध लिखे हैं। स्वामी रामतीर्थ का उनपर जबरदस्त प्रभाव था। उनका आवेश, उनकी काव्यमय भाषा ठीक वैसी ही है जैसी रामतीर्थ जी की थी। उनके निबंधों में उनका हृदय बोलता है।

उनके भावात्मक शैली का एक उदाहरण इसप्रकार है - ''जब पैगम्बर मुहम्मद ने ब्राम्हण को चीरा और उसके मौन आचरण को नंगा किया तब सारे मुसलमानों को आश्चर्य हुआ कि काफिर में मोमिन किस प्रकार सुज्ञ था। जब शिव ने अपने हाथ से ईसा के शब्दों को परे फेंककर उसकी आत्मा के नंगे दर्शन कराये तब हिन्दू चकित हो गये कि वह नग्न करने अथवा नग्न होनेवाला उनका कौनसा शिव था? हम तो एक-दूसरे में छिपे हुये हैं।''[४८]

'मजदूरी और प्रेम' भावात्मक शैली का उनका एक और महत्त्वपूर्ण निबंध है। कवि और कलाकारों की तुलना में मेहनतकश मजदूर अधिक श्रेष्ठ होता है। मजदूरी को जीवन का चरम लक्ष्य मानते हुए उनका कथन है - ''आओ यदि हो सके तो टोकरी उठाकर कुदाली हाथ में ले, मिट्टी खोंदे और अपने हाथ से उसके

प्याले बनावें । फिर एक-एक प्याला घर-घर में कुटिया में रख आवें और सब लोग उसी में मजदूरी का प्रेमामृत पान करे ।''[४९]

कभी-कभी तो भावों में वे इतने लीन हो जाते है कि विषय के संदर्भ को छोड़कर कल्पना के पंखों पर भावों के असीम गगन में स्वच्छंद विचरण करने लगते हैं, और फिर अचानक से अपनी बात भी आ जाते हैं । जैसे - ''न मैं किसी गिरजे में जाता हूँ और न किसी मंदिर में, न मैं नमाज पढ़ता हूँ और न रोजा ही रखता हूँ, न संध्या ही करता हूँ, न किसी आचार्य के नाम का मुझे पता है और न किसी के आगे मैंने सिर झुकाया है । इन सबसे प्रयोजन ही क्या और हानि ही क्या? मैं तो अपनी खेती करता हूँ, अपने हल और बैलों को प्रात: उठकर प्रणाम करता हूँ, मेरा जीवन जंगल के पेड़ों और पक्षियों की संगति में बीतता है ।''[५०] वे मानव संवेदना को धर्म और संप्रदाय से बड़ा मानते है ।

अध्यापक पूर्णसिंह की भाषा अत्यंत सरल, मधुर और आकर्षक है । उसमें एक गति है, सौंदर्य है और हृदय तथा मस्तिष्क को बांधनेवाला अद्‌भुत आकर्षण है । वे अपनी साधारण बात से ही पाठकों को चमत्कृत कर देते हैं ।

उनके निबंध अभिव्यक्ति की सहजता, भावों का आवेग और शब्दों की कसावट से परिपूर्ण हैं । भाषा पर उनका असाधरण अधिकार है । वे हिन्दी के शब्दों के साथ अंग्रेजी, संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू और पंजाबी के शब्दों का भी प्रयोग करते हैं । सूत्र रूप में अपनी बात कहने में वे माहिर है । प्रेम की भाषा शब्द रहित है। आचरण की सभ्यता का यह वाक्य सूत्रात्मक है, उसीप्रकार मजदूरी करना जीवन यात्रा का अध्यात्मिक नियम है । 'मजदूरी और प्रेम' का यह वाक्य भी सूत्रात्मक है ।

पूर्णसिंह ने बहुत कम निबंध लिखे हैं । फिर भी उनका निबंध साहित्य में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान शिल्प की प्रभावशीलता के कारण ही नहीं तो विचारों के प्रभाव के कारण भी है । उनके शिल्प की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने विचार प्रधान निबंधों को भी भावात्मक बना दिया है । लक्षणिकता उनके शैली का प्राण थी। वे अमरीकी कवि वाल्ट विटमैन से काफी प्रभावित थे । अपने विचारों और भाषा पर असाधारण अधिकार होने के कारण उनके निबंध पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं । अनेक समालोचकों ने पूर्णसिंह के सृजन और शिल्प की सराहना की है । गुलाबराय उनकी भाषा को लक्षणा और व्यंजनाशक्ति से जुड़ा हुआ मानते हैं । डॉ. जयनाथ नलिन के अनुसार उनकी भाषा शब्दों के नगीनों की तरह है । इसप्रकार अध्यापक पुर्णसिंह द्विवेदी युग के अत्यंत महत्त्वपूर्ण निबंधकार हैं ।

४) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी :

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने आधुनिक निबंध रचना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । उनकी एक कहानी 'उसने कहा था' आज भी प्रासंगिक है । उनके दो निबंध 'कछुआ धरम' तथा 'मारेसि मोंहिकुठांऊ' बहुत प्रसिद्ध हुए । वे सरस्वती पत्रिका में भी लिखते रहे । उनके अनेक निबंध भाव और विचारों का महत्त्वपूर्ण समन्वय करते हैं । उनके कुछ निबंधों के नाम इसप्रकार है - 'काशी की नींद और काशी के नूपुर', 'खेल भी शिक्षा है', 'शिक्षा के आदर्शों में परिवर्तन', 'होली की ठिठोली', 'एप्रिल फूल' इन निबंधों के माध्यम से गुलेरीजी ने अत्यंत सहज रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है ।

गुलेरीजी हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पाली, मराठी, भाषा के मर्मज्ञ थे । उनके उपलब्ध निबंधों ने उनका स्थान उत्तम निबंधकार की अपेक्षा उत्तम शैलीकार के

नाते ही उन्हें श्रेष्ठ स्तर पर प्रस्थापित किया । उनकी भाषा सरल, प्रवाहमयी और लाक्षणिकता से युक्त है । बातचीत की सहजता और सरलता उनकी भाषा की विशेषताएँ थी । शायद ही कभी उन्होंने लंबे वाक्यों का प्रयोग किया हो ।

'धर्म और समाज' उन्होंने स्पष्ट कहा है कि यह एक गंभीर विषय है । इसमें यह जानना जरूरी है कि समाज के लिए धर्म की आवश्यकता है या नहीं । उनका कथन है कि व्यक्ति धर्म को माने या न माने उससे कोई हानी नहीं होती । वे मतवादों से ऊपर उठकर मनुष्यता को ही मनुष्य का धर्म मानते हैं - "प्रत्येक पदार्थ में उसकी जो सत्ता है, जिसको स्वभाव भी कहते हैं वहीं उसका धर्म है । जैसे वृक्ष का धर्म जड़ता और पशू का धर्म पशूता कहलाती है । ऐसे ही मनुष्य का धर्म मनुष्यता है ।"[५१]

गुलेरीजी का कथन है कि काशी में धर्म करवट ले रहा है । धर्म का प्राचीन और वर्तमान स्वरूप व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया गया है कि अब धर्म का किसप्रकार दुरूपयोग हो रहा है । वे प्रगतिशील विचारधारा के है । खेल को वे शिक्षा ही मानते हैं । वस्तुत: खेल में शक्ति होती है । पक्षियों में भी कम ही सही पर खेलने की प्रवृत्ति पायी जाती है । गुलेरीजी ने अपने निबंधों में प्राचीन और वर्तमान स्थितियों के विरोधाभास को दिखाया है ।

गुलेरीजी के निबंधों में व्यंग्य, विचार ओर विवेचन दिखायी देता है । वे स्वभाव गंभीर वृत्ति के थे । उनका ऊँचा पूरा सुदृढ़ तेजस्वी शरीर उनके ज्ञान की गंभीरता को प्रकट करता था । उनको देखते ही उनके पांडित्य की धाक जम जाती थी। वह पांडित्य जड़ नहीं तो सरस था । उन्होंने अपने निबंधों में 'आँखों पर पट्टी बांधना', रिते मुँह पाठशाला में जाना आदि मुहावरों का प्रयोग उन्होंने किया है ।

गुलेरी जी ने अपने निबंधों में महाभारत, पौराणिक आख्यान, रामायण, आधुनिक समस्याएँ आदि से अनेक उदाहरण दिये हैं । उनमें विश्लेषण की प्रधानता

है । उनकी भाषा जटिल भी है और उदाहरण अधिक होने से वे अन्वेषणात्मक, निबंध के रूप में ही लिखे गये हैं । 'होली की ठिठोली' और 'एप्रिल फूल' जैसे निबंधों में कुछ सहजता भी मिल जाती है ।

गुलेरीजी के निबंध शोध-आलेखों के रूप में ही अधिक है । द्विवेदी युग में गुलेरी जी ने इन निबंधों को लिखकर गद्य के विकास में और निबंध-सृजन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । जिसे नकारा नहीं जा सकता । अपने निबंधों में उन्होंने इतिहास और संस्कृति की चेतना का समन्वय किया है । साथ ही विभिन्न प्रसंगों, लोकोक्तियों और मुहावरों का उचित प्रयोग करके अपने निबंधों में रोचकता का प्रमाण दिया है ।

द्विवेदी युगीन निबंधकारों में अनेक लेखकों ने अपना योगदान दिया है। जिनमें उपरयुक्त निबंधकारों के अलावा बाबू गुलाबराय, मिश्र बंधु, पद्मसिंह शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, पदुमानल पन्नालाल बख्शी आदि महत्त्वपूर्ण उल्लेखनीय नाम है ।

शुक्ल युग (विकास युग) :

द्विवेदी युग के बाद प्रसाद युग हिन्दी निबंध के स्वर्णयुग के रूप में सामने आता है । इस युग को छायावाद युग या शुक्ल युग भी कहा जाता है । इस युग में आचार्य रामचंद्र शुक्ल एक सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्त्व लेकर सामने आए । इस कारण अधिकांश विद्वानोंने इस युग का नाम 'शुक्ल युग' निर्धारित किया है ।

१) आ. रामचंद्र शुक्ल :

गांधी और गांधी वाद से प्रभावित यह युग साहित्य को एक नयी दिशा देता है । निबंध साहित्य के विकास में रामचंद्र शुक्ल का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

उन्होंने निबंध को हिंदी गद्य शैली के विकास के रूप में नया आयाम दिया है । उनके अनुसार भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही संभव है । निबंधों में लेखक अपने विचारों और भावों को सहजता के साथ व्यक्त करता है । शुक्लजी ने निबंध के प्रति अपने दृष्टिकोन को उसीप्रकार स्थापित किया जिस तरह बेकन ने अंग्रेजी साहित्य में किया था । उनके अनुसार उच्च कोटि के निबंध असाधारण शिल्प और गहन विचारधारा की अभिव्यक्ति होते हैं ।

रामचंद्र शुक्ल जी ने मनोविकार विषय १० निबंधों की रचना की है जो चिंतामणि भाग -१ में प्रकाशित है । उनका नाम इन निबंधों के कारण ही प्रमुख रूप से उभकर सामने आया । इन मनोविकारों में उत्साह, करूणा, ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, लज्जा और ग्लानि, भाव या मनोविकार, श्रद्धा, भक्ति, लोभ और प्रीति, भय के नाम शामिल है । मनोविकार निबंधों के साथ ही साहित्य की अवधारणाओं पर भी उनके छह निबंध मिलते हैं । जिनमें कविता क्या है, साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद, रसात्मक बोध के विविध रूप, काव्य में प्राकृतिक दृश्य, काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद सम्मिलित है । साहित्य समीक्षा पर उनके तीन निबंध मिलते जिनमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, तुलसी का भक्तिमार्ग, मानस की धर्म भूमि का समावेश है ।

उनके मनोविकास संबंधी निबंधों को हिंदी साहित्य की संपत्ति कहा गया है । इन निबंधों में मनोवैज्ञानिक पक्ष को महत्त्व दिया गया है । शुक्लजी ने मनोविकारों को तुलनात्मक रूप में रखा है । श्रद्धा और भक्ति निबंध में वे कहते हैं - ''यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण । प्रेमी प्रिय को अपने लिए और अपने को प्रिय के लिए संसार से अलग करना चाहता है । प्रेम में केवल दो पक्ष होते हैं, श्रद्धा में तीन । प्रेम में कोई मध्यस्थ नहीं पर श्रद्धा में मध्यस्थ अपेक्षित है । प्रेमी और प्रिय

के बीच कोई वस्तु अनिवार्य नहीं, पर श्रद्धालु और श्रद्धेय के बीच कोई वस्तु चाहिए।''[५२]

विचारों की क्रमबद्धता, गठे हुए वाक्य उनके विचारों की विशेषता बन जाते हैं । क्रोध निबंध में उन्होंने लिखा है - ''बैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है ।''[५३]

क्रोध क्षणिक होता है, पर बैर स्थायी कितनी सहजता से क्रोध और बैर के अंतर को स्पष्ट कर दिया गया है । वे जानते थे कि गंभीर विचारों को पाठक आसानी से नहीं अपनाते । इसलिए अपने निबंधों में उन्होंने व्यंग्य शैली का भी समावेश किया है । उसका एक उदाहरण इसप्रकार है - ''जिस समय कोई कलावंत पक्का गाना गाने के लिए आठ अंगुल मुंह फैलाता है और आ-आ करके विकल होता है उस समय बड़े बड़े धीरों का धैर्य छूट जाता है - दिन-दिन भर चुपचाप बैठे रहनेवाले बड़े-बड़े आलसियों का आसन डिग जाता है ।''[५४]

विवेचन और व्यंग्य के माध्यम से उनके निबंधों में सरसता आ गयी है । अभिव्यंजना के प्रयोगों ने उनके निबंधों को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है । किसी भी विषय को लेकर सूत्ररूप में अपनी बात कहना उनकी विशेषता है । जैसे - यदि प्रेम स्वरूप है तो श्रद्धा जागरण, उसीप्रकार बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है । इसप्रकार उनके निबंधों में शिल्प के अनेक रूप दिखायी देते हैं ।

रामचंद्र शुक्लजी ने अपने निबंधों में परिनिष्ठित खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग किया है । उसके साथ ही देशी और विदेशी भाषाओं के शब्द भी उनके निबंधों में मिल जाते हैं । देशज शब्दों में गडबड़जाना, संगत जैसे शब्द है । उसीप्रकार उर्दू, फारसी के शब्दों में बाजार, खुशामद, गुलाब, दोस्त, अजायबघर जैसे अनेक शब्द मिल जाते हैं । अपने निबंधों को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कहावतों और मुहावरों का

भी व्यापक रूप से प्रयोग किया है । जिससे भाषा को अधिक अर्थता मिल गयी है । जैसे - "उसे या तो कांटों पर या ढाई कोस नौ दिन में चलना पड़ता है । या उंगली का सहारा पाने वाले बांह पकड़ कर खींचने लगे ।"[५५]

शुक्लजी के निबंध विचारात्मक होते हुए भी उनमें अनेक स्थानों पर काव्यात्मकता दिखायी देती है । उसका एक उदाहरण इसप्रकार है - 'कोमलांगी सीता, अपने प्रिय पति की विशाल भुजाओं और कन्धे के उपर निकली हुई धनुष की वक्रकोटि पर मुग्ध निविड़ और निर्जन काननों में नि:शंक विचार कर रही है, खर-दूषण की राक्षसी सेना कोलाहाल करती आ रही है । राम कुछ मुस्काराकर एक बार प्रेम भरी दृष्टि से सीता की ओर दखेते हैं, फिर वीर दर्प से राक्षसों की ओर दृष्टि फेर कर अपना धनुष चढ़ाते हैं । इस वीर दर्प में कितनी उमंग, कितना उत्साह, कितना माधुर्य रहा होगा ।'[५६]

शुक्लजी ने अनेक बड़े निबंध भी लिखे हैं, जिनमें व्यापक रूप से साहित्य की व्यापक समस्याओं पर विचार किया गया है । काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था इसी प्रकार का निबंध है, जिसमें वे लोग में आनंद की अभिव्यक्ति की साधनावस्था और सिद्धावस्था के रूप में देखते हैं । उन्होंने अपने निबंध के माध्यम से गद्य का विकास किया । उनके निबंध छोटे भी और बड़े भी । जिनमें सृजात्मकता के सौंदर्यपरक, विचारात्मक और आलोचनात्मक स्तर है । उनकी निबंध रचना उन्हें साहित्य सृजक के रूप में स्थापित करती है और परवर्ती निबंध रचना पर भी उनका व्यापक प्रभाव है ।

२) बाबू गुलाबराय :

गुलाबराय इस युग के एक अन्य महत्त्वपूर्ण निबंधकार है । आलोचना साहित्य के साथ ही उनका निबंध साहित्य भी अत्यंत समृद्ध है । निबंध रचना में उन्होंने

अपनी प्रतिभा का व्यापक रूप से परिचय दिया है । उनकी रचनाओं में फिर निराशा क्यों, मैत्री, धर्म, ठलुआ क्लब, विज्ञान-विनोद, जीवन-पद, आत्म-निर्माण, मन की बातें, मेरे निबंध, कुछ उथले कुछ गहरे, विद्यार्थी जीवन, मेरे असफलताएँ आदि प्रमुख हैं । उनके निबंधों को विचारात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, भावात्मक और ललित-निबंधों की श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है ।

उनका 'मन की बातें' मनोविश्लेषणात्मक निबंध है । इसमें अनेक निबंधों का संकलन किया गया है । ललित निबंधों में उन्हें काफी सफलता मिली है जिनमें मेरी असफलताएँ, ठलुआ क्लब, में संकलित निबंधों को लिया जा सकता है। निबंध के संबंध में उनका कथन है - ''निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक, संगीत और सम्बद्धता के साथ किया गया हो ।''

उनके निबंधों में विषय कभी प्रधान नहीं रहा, शैली ही प्रमुख रही । वे निबंधों में सरल और सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं । उनकी वाक्य योजना सुगठित है साथ ही लोकोक्तियाँ और कहावतों का भी उन्होंनें खुलकर प्रयोग किया है । उनके मुहावरों में 'बांछे खिलना', 'लोहे के चने चबाना', 'खैर मनाना', 'पत्थर की लकीर' प्रमुख हैं । इसीप्रकार कहावतों और लोकोक्तियों में - 'नौ नगद तेरह उधार', 'जान बची लाखों पाये', 'जंगल में मोर नाचा किसने देखा', 'ऊंट के मुँह में जीरा', 'जिसका खाना उसका गाना' जैसे प्रयोग मिलते हैं । उनकी भाषा भी प्रभावपूर्ण हैं । जैसे - ''कहा साधारणीकरण और अभिव्यंजनावाद की चर्चा और कहा भूस का भाव । भूस खरीदकर मुझे भी गधे के पीछे-पीछे चलना पड़ता है । जैसे बहुत से लोग अक्ल के पीछे लाठी लेकर चलते हैं ।''

गुलाबराय के निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे गहन विषय को भी व्यंग्य और विनोद के माध्यम से आसान बना देते हैं । मानवता के आधार स्तंभ हो या जीवन और दर्शन हो इन सभी विषयों पर विचार करते हुए उन्होंने सरल भाषा में अपने विचार पाठकों के सामने व्यक्त किये हैं । आत्मव्यंजक भाषा का एक उदाहरण इसप्रकार है - "लोग कहते हैं कि भूखे भजन न होई गोपाल किन्तु मैं भूख में ही भजन करता हूँ । मुझे धूप की गंधी बड़ी अच्छी लगती है । बिना मंत्रों के ही कभी-कभी हवन कर लेता हूँ । भक्ति भावना से नहीं, वरन् नाद-सौंदर्य के कारण कभी देवताओं के श्लोक पढ़ लेता हूँ और कभी-कभी जल्दी में गीता के पितासि लोकस्यचराचरस्थ के साथ भर्तृहरि के श्रृंगार शतक के श्लोक या कालिदास के मेघदूत या शंकुतला के तन्वी श्यामा शिखिरदशना वाला श्लोक पढ़ जाता हूँ । इसके लिए मैं स्वर्ग से विमान आने की प्रतीक्षा नहीं करता । मेरा धर्म स्वान्त: सुखाय है ।"[५७]

उनकी भाषा अधिकांशत; संस्कृत गर्भित है । विषय के प्रतिपादन में तर्क, क्रम और संगति का ध्यान उन्होंने रखा है । तत्सम शब्दों की अधिकता होने के बावजूद भी गुलाबराय की भाषा अत्यंत बोधगम्य, सरल और अर्थमयी है । वाक्य कहीं पर दीर्घ तो कहीं पर छोटे है । साधारण विषयों पर लिखे हुये निबंधों में वाक्य अपेक्षाकृत छोटे-छोटे और विचारात्मक निबंधों में वे दीर्घ बन गये हैं । बाबूजी अध्यापक थे । उनकी यह अध्यापकीय वृत्ति निबंधों में भी दिखायी देती है ।

बाबूजी अपने किसी भी निबंध में व्यंग्य के छीटे मारने से नहीं चुकते। उसकी उपस्थिति प्राय: हर निबंध में रहती है । व्यंग्य के संबंध में तो उन्होंन स्वयं कहा भी है - जहाँ हास्य के कारण अर्थ का अनर्थ होने की संभावना हो अथवा अत्यंत करूण

प्रसंग हो तो हास्य से बचूंगा, अन्यथा मैं प्रसंगगत हास्य का उतना ही स्वागत करता हूँ । जितना की अनायास आए हुए धन का । व्यंग्य शैली के निबंधों की भाषा व्यावहारिक बोलचाल की चलती हुई भाषा है ।

उनका निबंध 'विफलता' हमें उन्हीं के 'दु:ख' निबंध की प्रतिकृति लगता है । दु:ख में जैसे वे सुख के लिए दु:ख की आवश्यकता प्रतिपादित करते है। वैसे ही विफलता में सफलता के मापन के लिए विफलता को मानदंड के रूप में प्रस्तुत करते हैं । विफलता हमारी अयोग्यता को प्रकाश में लाकर हमें सफल बनाते हैं ।

'ठलुआ क्लब' और 'मेरी असफलताएँ' में उनके हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध संग्रहित हैं । इसमें मधुमेही लेखक की आत्मकथा में डॉक्टरों को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उन्होंने लिखा - "आप साधारण जल को बहुमुल्य औषधि बना, उसमें से लक्ष्मीदेवी का प्रादुर्भाव कर समुद्र मंथन का काम नित्य अभिनय करते हैं । वैसे तो स्वयं धन्वंतरी रूप से - आपका भी प्रादुर्भाव लक्ष्मी जी के साथ हुआ था । धन्वंतरी जी अमृत का घट लिये हुए निकले थे । आपकी दवाईयों की पेटी पीयूष धारा से कम नहीं हैं ।"[५८]

डॉ. गुलाबराय के निबंध सृजन के संदर्भ में उनका शिल्प अत्यंत व्यापक है । व्यक्तिप्रधानता के साथ हास्य व्यंग्य का समावेश और भाषा को शब्दों का व्यापक प्रयोग उनके शिल्प की विशेषताएँ है । साथ ही विवेचनात्मक शैली का भी उन्होंने प्रयोग किया है । आ. रामचंद्र शुक्ल के उत्कर्ष काल में निबंध रचना में गुलाबराय जी का अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ।

३) पं. माखनलाल चतुर्वेदी :

पं. माखनलाल चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्त्व बहुमुखी था । कवि के रूप में, नाटककार के रूप में, कहानीकार के रूप में, पत्रकार के रूप में, वक्ता के रूप में एवं राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में उनको अपार ख्याति मिल चुकी थी । स्वाधीनता संग्राम के योद्धाओं में उनका भी नाम था । उनका सारा जीवन संघर्षमय ही रहा । बचपन में दरिद्रता से, यौवन में विदेशी सत्ता से और वृद्धावस्था में शारीरिक बिमारियों से वे निरंतर लड़ते ही रहे ।

चतुर्वेदी जी की पहचान कवि के रूप में हैं, पर साथ में वे एक समर्थ संपादक, पत्रकार और निबंधकार भी थे । उनके निबंधों में भावात्मकता प्रमुख रूप से दिखायी देती है । 'साहित्य देवता' में जितने भी निबंध संकलित है वे माखनलाल चतुर्वेदी जी के भावात्मक स्वरूप को व्यक्त करते हैं । जैसे एक उदाहरण - ''कौन सा आकार दूँ? मानव हृदय के मुग्ध संस्कार जो हो । चित्र खिंचने की सुध कहां से लाऊं ? तुम अनन्त जाग्रत आत्माओं के उंचे और गहरे-पर स्वप्न जा हो । मेरी काली कलम का बल समेटे नहीं सिमटता । तुम कल्पनाओं के मंदिर में बिजली की व्यापक चकाचौंध जो हो । मानव सुख के फूलों और लड़ाके सिपाही के स्वप्न बिन्दुओं के संग्रह, तुम्हारी तस्वीर खींचू मैं ? तुम तो वाणी के सरोवर में अन्तरात्मा के निवासी की जगमगाहट हो । लहरों से परे, पर लहरों में खेलते हुए । रजत के बोझ और तपन से खाली, पर पंछियों, वृक्ष, राजियों और लताओं तक को रूपहलेपन में नहलाये हुए।''[५९]

चतुर्वेदीजी बहुभाषाविद् थे । हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं का उन्हें अच्छाखासा ज्ञान था । हिन्दी गद्य को उन्होंने एक नया

रूप दिया । उन्होंने अपने निबंधों में पौराणिक आख्यानों और ऐतिहासिक प्रसंगों का भी समावेश किया है । उनके 'साहित्य देवता' के अनेक निबंधों में अतीत और संस्कृति से प्रेम दिखायी देता है । वे अपनी मातृभाषा और मातृभूमि को अधिक महत्त्व देते हैं । भावात्मक अधिकता के कारण उनके निबंधों में प्रतीकात्मकता का भी समावेश हो गया है । जिसका एक उदाहरण इसप्रकार है - ''आह, कौन नहीं जानता कि तुम कितनों ही की बंसी की धुन हो, धुन वह जो गोकुल से उठकर विश्व पर अपनी मोहिनी का सेतु बनाये हुए है । काल की पीठ पर बना हुआ वह पुल मिटाये मिटता नहीं, भुलाये भूलता नहीं । ऋषियों का राग, पैगम्बरों का पैगाम, अवतारों की आन, युगों को चीरती किसी लालटेन के सहारे हमारे पास तक आ पहुँची ? वह तो तुम हो और आज भी कहां ठहर रहे हो ? सूरज और चांद को अपने रथ के पहिये बना, सूझ के घोड़ो पर बैठे, बढ़े ही तो चले जा रहे हो प्यारे । उस समय हमारे सम्पूर्ण युग का मूल्य तो मेल-ट्रेन में पड़नेवाले छोटे से स्टेशन का सा भी नहीं होता ।''[६०]

चतुर्वेदी जी की भाषा अलंकृत, लयबद्ध और वेगवती है । अधिकतर वह लघु वाक्यों में और कभी दिर्घ वाक्यों में कविता के समान प्रभावित होती दिखायी देती है । जैसे - ''शताब्दियाँ हुई कि अब हम उससे अधिक कुछ नहीं पहुँचा पाते और जब हम देखते है कि गुलाब की डाल पर परसों की बोंडी कली हो गयी है, कल की कल आज खिल गयी है, और आज फूल बनकर अपने उन्मेष को, कीचड़ को चूसती, मिट्टी और ठेलों में मस्तक उठाती तथा काँटों की टहनी पर गुरूत्वाकर्षण से विद्रोह करती हुई, ताकत से सिर उठाकर, फूलकर आज लम्बी यात्रा समाप्त कर पंखुड़ी-पंखुड़ी होकर धूल में मिल जाने को बाध्य है, तब भी हम यह अनुभव क्यों नहीं करते कि लोग-जीवन के पास साहित्य पहुँचाने में शताब्दियाँ तो दूर, अब विलम्ब में दिन भी नहीं गुजरने दिये जा सकते ।''[६१]

उर्दू काव्य में जो प्रभावोत्पदकता होती है, वही प्रभावोत्पादकता चतुर्वेदी जी की भाषा में प्राप्त होती है । वे अपने समय के सर्वोत्तम वक्ता थे । उनकी भाषा में कथन की लाक्षणिकता, सूक्तिमयता, प्रवाह एवं तीव्र संवेदनशीलता का अद्‌भूत समन्वय मिलता है । उनके निबंधों में स्थान-स्थान पर सूत्रवाक्य मिलते हैं ।

DR BABASAHEB AMBEDKAR MARATHWADA UNIVERSITY LIBRARY AURANGABAD

- "अभाव में, मानव-भाव हरे होते हैं, मानव अविष्कार उगते हैं ।"[६२]

- "विकास के पथ के लगातार शोध ही को साहित्य कहते हैं ।"[६३]

- "क्रियाहीन समर्थन की अपेक्षा ईमानदार मतभेद अधिक मूल्यवान है ।"[६४]

व्यंजना और वक्रोक्ति का प्रयोग चतुर्वेदी जी ने अधिक किया है । उनके निबंध व्यक्तिवादी और ललित निबंधों का सार्थक प्रमाण है । रंगो की बोली, अमीर इरादे गरीब इरादे, साहित्य देवता, युगकला उनके निबंधों के महत्त्वपूर्ण संकलन है । उनके अधिकांश निबंध आत्म प्रकाशन का उत्कृष्ट उदाहरण है । डॉ. प्रभाकर माचवे ने साहित्य देवता की भाषा शैली को सराहा है । उनका कहना है कि माखनलाल चतुर्वेदी के निबंध भाव और संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिए भाषा के प्रभावी रूप को प्रयोग में लाते हैं । वे अनेक भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करते हैं साथ ही भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना का भी उनके निबंधों में समावेश हुआ है ।

चतुर्वेदी जी अपने एक निबंध 'अमीर इरादे गरीब इरादे' में स्पष्ट कहते हैं कि वे असफलता में लिखे गये है और मैं के माध्यम से उन्होंने अपने विचारों और भावों की अभिव्यक्ति की है । वे प्रयास नहीं करते, सहजता से लिख देते हैं । उनके पास शब्दों की कमी नहीं है । गहन अनुभूति और वाक्य प्रवाह उनके निबंधों की विशेषताएँ हैं ।

४) सियारामशरण गुप्त :

प्राचीन के प्रति आस्थावान, नूतन के प्रति सहृदय, स्वभाव से विनयशील, मनुष्य की महानता पर विश्वास रखनेवाले, जीवन के दु:खों को, पराभवों और उपेक्षाओं को शांत भाव से पहचाननेवाले तपस्वी साहित्यकार सियामरामशरण गुप्त जी का व्यक्तित्त्व 'झूठ-सच' में दिखायी देता है । उनका 'झूठ-सच' निबंध संग्रह हिन्दी साहित्य के निर्बंध निबंधों की परम्परा में एक महत्त्वपूर्ण सोपान है । इन निबंधों में बाल्यकाल की स्मृतियाँ यात्राओं, व्यक्तिओं और वस्तुओं के वर्णन, जीवन, समाज तथा साहित्य संबंधी तथ्य-चिंतन, व्यंग्य-हास्य-विनोद सब कुछ हैं ।

गुप्त जी भाषा उनके निबंधों का प्रमुख आकर्षण है । वह इतनी सहज, आकर्षक और ललित है कि जैसे वह कहानी की ही भाषा लगती है । तार्किकता और भावुकता का उसमें अनोखा संगम हैं । उनके वाक्य सीधे, सरल और छोटे-छोटे हैं । उन्होंने कई स्थानों पर कहावतों, मुहावरों और लोकोक्तियों का भी उचित प्रयोग किया हैं । उनके निबंधों को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे वे पाठकों के साथ बैठकर गपशप लगा रहे हो - "जितने वर है, सब इसी जैसे है । पर विस्मय हुआ, जब आज एक ऐसा वर भी दिखायी दे गया जो चाहता है, उसके वे ढाई दिन कभी समाप्त न हो । समझ में उसकी बात आ नहीं रही है । हो सकता है कोई गहरी बात हो । शायद आप में से कोई साहब समझ सके । समझा सकेंगे ?"[६५]

उनकी भाषा में सूत्रात्मक वाक्य भी सहजता से प्राप्त हो जाते हैं । जैसे - "तर्क जन्म से ही क्षत्रिय है । जिनकी सीमा छोटी है, उन्हें निराश नहीं होना चाहिए। कवि विधाता की असाधारण सृष्टि है । इत्यादि गुप्तजी के विचारात्मक निबंध ही अधिक है । निबंधों में विषय और उसके प्रतिपादन की ओर उनका विशेष ध्यान रहा।

उन्होंने अपने निबंधों में विषय के अनुरूप ही वाक्यों का गठन किया है । अधिकतर छोटे-छोटे वाक्यों का ही प्रयोग किया है । जैसे - 'फिर अन्धेरा फैल गया', 'चिनगारियाँ एक क्षण भी टिकी न रह सकी, उठी और विलीन हुई' ।

गुप्त जी ने निबंधों के मानवजीवन के प्रति उदार, सहानुभूतिपूर्ण एवं आशावादी दृष्टिकोण दिखायी देता है । उनके निबंधों में वैयक्तिकता शुरू से आखिर तक दिखायी देती है - "उस युग में वैयक्तिकता का मतलब था किसी विषय के संबंध में अपने विचार व्यक्त करना, मगर यह तो निबंधकार के व्यक्तित्त्व की अभिव्यक्ति का एक पक्ष हुआ । भारतेन्दु युग तथा वर्तमान युग में निबंधों में वैयक्तिकता की निहिति का जो तात्पर्य समझा जाता है, वह यह नहीं है । तो, द्विवेदी युग के निबंधकारों में विचारात्मकता के प्राधान्य के व्यवधान के कारण छायावाद, रहस्यवाद तथा वर्तमान युग में वैयक्तिकता देखने-सुनने के हेतू निबंधकार भारतेन्दु युग में नहीं गये, वे इसके लिए अंग्रेजी के आधुनिक निबंधों की ओर गये । सियारामशरण गुप्त ने ऐसा ही किया ।"[६६]

अपनी विशिष्ट शैली और दृष्टिकोण के कारण गुप्तजी के निबंध तत्कालीन साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त कर सके और पाठकों का स्नेह तथा आदर उन्हें बहुत समय तक मिलता रहा ।

यह युग निबंधों की सभी शैलियों की दृष्टि से विकसित युग था । निबंध इस युग में साहित्यिक चेतना से ही अधिक प्रभावित रहा, जबकि पूर्ववर्ती युगों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतनाएँ प्रमुख थी । इस युग के सभी निबंधकार मूलत: साहित्यिक चेतना से प्रभावित थे । साथ ही वे गांधीवाद के आदर्शों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित थे ।

विस्तरण युग (शुक्लोत्तर युग) :

१९४७ के बाद सारे भारतीय साहित्य में परिवर्तन की एक लहर आयी और साहित्य की सभी विधाओं में एक नया युग शुरू हुआ । शुक्ल युग के बाद हिन्दी निबंध के विकास का अद्यतन युग आरंभ होता है । इस युग तक आते-आते निबंध विधा हिंदी साहित्य में पूरी तर प्रतिष्ठित हो चुकी थी । विषयों की विविधता साथ-साथ शैली की अनेकरूपता उसमें बड़े कलात्मक रूप में दृष्टिगोचर होने लगी ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के उपरान्त आधुनिक हिन्दी निबंधों का व्यापक विकास हुआ है । उनमें अनेक प्रकार की नई प्रवृत्तियाँ सामने आयी है । विचार प्रधान निबंधों में अगर रामचंद्र शुक्लजी महत्त्वपूर्ण निबंधकार हैं, तो आधुनिक ललित निबंधों में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का नाम महत्त्वपूर्ण है । इस युग में ललित-निबंध अपने चरम उत्कर्ष पर था । इसमें ललित-निबंधों का विकास एक क्रम में हुआ । वह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी से प्रारंभ होकर कुबेरनाथ राय, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, विद्यानिवास मिश्र तक जाता है ।

इस युग के कुछ प्रमुख ललित निबंधकारों की रचनाओं का अध्ययन हम इसमें करेंगे ।

१) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी :

आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का निबंध रचना में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है । उन्होंने ललित-निबंध की रचना में नये आयाम प्रस्तुत किये हैं और उसमें संस्कृति और संवेदना के व्यापक परिवेश को रचा है । उनके निबंध संग्रह में 'अशोक के फूल', 'कल्पकता', 'विचार और वितर्क', 'विचार प्रवाह', 'कुटज और आलोक पर्व' प्रमुख हैं । अशोक के फूल में उन्होंने ललित-निबंधों का सहज रूप प्रस्तुत किया है । वे संवाद शैली में सवाल पूँछते है और अनुभूति को व्यंग्य के साथ जोड़ देते हैं।

ललित निबंधों का आधार सौंदर्य होता है । उसमें आत्मपरकता और व्यंजनात्मकता भी होती है । यही कारण है कि वे आज के समय को अशोक के फूल के माध्यम से जिस विरोध में व्यक्त करते हैं वह यही है कि आंतरिक दुनिया में सौंदर्य का मूल्य नहीं रहा है । फिर भी यही सौंदर्य ही है जो मन का स्पर्श करता है । एक उदाहरण इसप्रकार है - "जिन बातों को मैं अत्यंत मूल्यवान समझ रहा हूँ और जिनके प्रचार के लिए चिल्ला-चिल्लाकर गला सुखा रहा हूँ, उनमें कितनी जियेंगी और कितनी बह जायेंगी, कौन जानता है ? मैं क्या शौक से उदास हुआ हूँ ? माया काटे कटती नहीं । उस युग के साहित्य और शिल्प मन को मसल दे रहे हैं । अशोक के फूल ही नहीं, किसलय भी हृदय को कुरेद रहे हैं ।"[६७]

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के निबंधों की भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग दिखायी देता है । उनमें स्थानीय और देशज शब्द भी मिल जाते हैं । उर्दू, फारसी के शब्दों के साथ उन्होंने आवश्यकता के अनुसार अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है । उनका शब्द प्रयोग अत्यंत व्यापक है । भाषा की इस व्यापकता में उन्होंने शिल्प के भी प्रयोग किये है । उनके शिल्प में विचारात्मकता और आलोचनात्मकता के साथ ही भावात्मकता और आवेग की प्रधानता है ।

उनका सबसे प्रमुख निबंध संग्रह 'अशोक के फूल' ही है । जिसमें सौंदर्य और संस्कृति का समन्वय दिखायी देता है । इन निबंधों में तन्मयता है, रस है, भाव और कल्पना है इसीलिए वे ललित निबंध की श्रेणी में आते हैं । उनके निबंधों का दूसरा वर्ग सांस्कृतिक निबंधों का है । उन्होंने विश्व मानवता की संस्कृति के अनंत प्रवाह को भारतीय संस्कृति के साथ जोड़ा है । उनके अनुसार मनुष्य जो कुछ भी उत्तम साधना करता है वही संस्कृति के रूप में सामने आता है । तिसरा वर्ग अनुसंधानात्मक

निबंधों का है । उन्होंने अपभ्रंश, सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य का व्यापक अध्ययन किया है और इन विषयों पर निबंध लिखे हैं । वे मानते है कि भारतीय समाज आज वैसा नहीं है जैसा पहले था । अनेक जनसमूह इस विशाल देश में आते रहे हैं और इस विराट जनसमूह में उनकी विचारधारा का सामाजिक विस्तार होता रहा है ।

द्विवेदीजी जब निबंध लिखते हैं तो बात से बात निकलती चली जाती है । टहनियों से शाखाओं तक विषय व्याप्त रहता है, और निबंधकार प्रसंगवश, काव्य, धर्म, संस्कृति को वर्णित करता चलता है और पाठक आत्मविभोर होकर देखता ही रह जाता है । 'एक कुत्ता और मैना', 'आम फिर बौरा गये', 'मेरी जन्मभुमि', 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', ऐसे ही निबंध है जिनमें हमें द्विवेदीजी की स्पष्ट छाया दिखायी देती है । इन निबंधों की भाषा में काव्य की तरह सरसता, स्वच्छंदता तथा कल्पनाशीलता के वर्णन है ।

उनकी अभिव्यक्ति और शिल्प सहज और संप्रेषणीय है । वे किसी भी बात को बड़ी सरल भाषा में सामने रख देते हैं । आज यदि संसार की सारी समस्याओं का विश्लेषण करें तो उसके मूल में एक ही बात पायेंगे - 'मनुष्य की तृष्णा' । उनकी अभिव्यक्ति की सरलता का रूप इसप्रकार है - "जहाँ जीवन का वेग अधिक है, प्राण धारा का बहाव तेज है, उस स्थान से उसका ऐश्वर्य छितरायेगा ही । आलोक सीमा में बंधना नहीं चाहता, उसका धर्म प्रकाशित करना ही है । किसी समय भारत वर्ष में यह जीवन का ऐश्वर्य था कहां उसका प्रकाश नहीं फैला ?"[६८]

प्रकृति के मौसम और फूलों के माध्यम से वे अनेक सांस्कृतिक मिथकों को जोड़ते हैं । यह उनके निबंधों की एक ऐसी विशेषता है जो अन्य निबंधकारों में नहीं मिलती । 'एक कुत्ता और मैना' इस दृष्टि से उनकी अविस्मरणीय

रचना है । द्विवेदी जी उच्चकोटि के ललित निबंधकार और कथाकार है । वे मानवतावादी कलाकार है । अपने साहित्य में उन्होंने मनुष्य को सामाजिक चेतना में केन्द्रिय स्थान दिया है ।

वे भाषा को सामाजिक संबंधों का प्रतीक मानते हैं । शब्द और अर्थ का व्यापक महत्त्व है । भाषा जब छंदों में होती है तो उसमें आवेग आ जाते हैं । जब गद्यात्मक होती है तब आवेग कम होते हैं । वे भाषा की सहजता में विश्वास करते हुए कहते हैं - नि:सन्देह मैं सहज भाषा का पक्षपाती हूँ । परंतू सहज भाषा में उसे समझता हूँ तो सहज ही मनुष्य को आहार, निद्रा आदि पशु सामान्य धरातल से उपर उठा सके।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने ललित निबंधों की ही रचनावली की तो निबंध रचना को मनुष्य और समाज के एक व्यापक परिवेश से जोड़ा है । वे भारतीय संस्कृति और मिथकों का प्रकृति के सौंदर्य और अतीत के गौरव गान में भी प्रयोग करते हैं । उनकी चिंताएँ अपने समाज और परिवेश की चिंताएँ बनकर व्यापक मानवता से जुड़ जाती है । उनके निबंधों में कला और सरोकार दोनों का समन्वय है। और निबंधकार के रूप में साहित्य के इतिहास में वे एक मील स्तंभ के समान है ।

२) महादेवी वर्मा :

आधुनिक निबंधकारों में महादेवी वर्मा जी की भी अपनी एक अलग पहचान है । उन्होंने अपना समस्त जीवन हिन्दी साहित्य की सेवा के लिए ही समर्पित किया । कवियित्रि और चित्रकर्ती के रूप में प्रसिद्ध महादेवी एक उच्च कोटि की निबंधकार भी है ।

महादेवी वर्मा छायावादी कविता में अपना विशेष स्थान रखती है । साथ ही उनका गद्य भी सशक्त है । जिसमें 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ',

'श्रृंखला की कड़ियाँ' और 'क्षणदा' प्रमुख हैं । उनके निबंधों में रेखाचित्र और संस्मरण का समन्वय मिलता है । उन्होंने अपने निबंधों में समाज केंद्रित रचनाओं को विशेष लक्षित किया है । जिसमें नारी संघर्ष के अनेक रूप मिलते हैं । नारी के प्रति उनकी सहानुभूति अत्यंत व्यापक है ।

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्त्व उनके सारे साहित्य में देखा जा सकता है। उनका काव्य वेदना और करूणा का गीत है । उनके निबंध उनकी व्यापक और गह न अनुभूति की अभिव्यक्ति है । नारी की आज समाज में जो स्थिति है इसके लिए वे पुरूष को उत्तरदायी मानती है । वे अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए चिंतन का प्रयोग किस रूप में करती है इस पर भी उन्होंने एक स्थान पर लिखा है - "संगीत थम जाने पर गायक जैसे औरों के वाद्य-और अपने गीत की संगति पर विचार करने लगता है वैसे ही इनमें मेरे विचार, भाव की सीमा-रेखा पर स्थित है ।"[६९]

उनके प्रकाशित निबंध संग्रहों में 'क्षणदा', 'श्रृंखला की कड़ियाँ', और 'महादेवी का विवेचनात्मक गद्य' प्रमुख हैं । 'श्रृंखला की कड़िया' में नारी जीवन के विविध पक्षों और समस्याओं पर विचार किया गया है । 'क्षणदा' में सांस्कृतिक विषयों से संबंधित उनके दस निबंध संकलित हैं । विवेचनात्मक गद्य में उन्होंने छायावाद, रहस्यवाद और प्रगतिवाद सहित अनेक विचारधाराओं का विवेचन किया है ।

अपने अनेक निबंध, रेखाचित्र और संस्मरण में महादेवी ने सरल और कोमल भाषा का प्रयोग किया है । छोटे-छोटे सरल वाक्य और उदाहरण देकर अपनी बात समझाने में महादेवी सिद्धहस्त है । उसका एक उदाहरण इसप्रकार है - "भावहिन के गोल नथुने कुछ फैल जाते हैं । भृकुटियां कुछ कुंजित हो उठती है, माथे पर खिंची रेखाएँ सिमटने लगती है, और ओठो के आसपास बिखरी झुर्रियां उलझ जाती है । पर

वह उसे चाय देती है अवश्य । हां, यह सत्य है कि गिलास वहीं ढूंढ निकालती है, जिसकी मुरादाबादी कलाई के भीतर पतल झांकने लगी है ।''[७०]

उनके वर्णनात्मक निबंधों का आकर्षण उनकी लालित्यपूर्ण प्रसाद शैली है । जैसे - ''बद्रीनाथ पुरी में देखने योग्य वस्तुओं में मन्दिर और अलकनंदा के बीच में बहुत उष्ण जल का और एक ठंडे जल का सोता है । वही एक कुंड बना दिया गया है, जिसमें दोनों स्त्रोतों का जल मिलाकर यात्रियों को स्नान कराया जाता है । संभव है यही तप्तकुंड इस स्थान की प्रसिद्धि का कारण हो ।''[७१]

अपने कुछ निबंधों में महोदवीजी ने व्यंग्य शैली का भी प्रयोग किया है । उनका व्यंग्य चोट करनेवाला व्यंग्य है । उसमें भाषा या विचारों का हल्कापन नहीं है । उन्होंने अपने व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया है । इससे उनके विचारों में ओज आया है ।

भाषा के संबंध में महादेवी भावों के अनुकूल शब्दों के चयन के प्रति काफी सचेष्ट रही । वे मूल रूप से कवयित्रि रही और उनकी भाषा शैली में कविता की झलक भी मिलती है । साथ ही उनके निबंधों की भाषा में मुधरता, संगीतमयता और चित्रमयता भी दिखायी देती है । उन्होंने अपनी भाषा में अधिकतर संस्कृत के तत्सम शब्दों का ही प्रयोग किया है, पर अन्य भाषाओं के शब्द भी उसमें मिल जाते है । बोलचाल की भाषा का प्रयोग भी उन्होंने अपने निबंधों में किया है । उनकी भाषा का तीसरा रूप चित्रमय भाषा है । जिसका उदाहरण इसप्रकार है - ''कुछ समतल भुख, एक ही सांचे में ढले से जान पड़ते हैं और उनकी एकरसता दूर करनेवाली वस्त्र पर पड़ी हुई सिकुडंन जैसी नाक की गठन में भी विशेष अन्तर नहीं दिखाई देता । कुछ तिरछी, अधखुली और विरलभूरी बरौनियोंवाली आँखों की तरह रेखाकृति देखकर

भ्रान्ति होती है कि वे सब एक नाप के अनुसार किसी तेज धार से चीरकर बनाई गई है।"[७२]

भाषा की यह विविधता उनकी निबंधों को विशेषता प्रदान करती है। उनकी संवेदना को गरिमा प्रदान करती है। उसकी भाव प्रवणता जीवन सौंदर्य को व्यक्त करती है। उनकी सूक्तियाँ मार्मिक पैनी और सारगर्भित होती है। जैसे - मनुष्य स्वयं एक सजीव कविता है या साहित्य समाज की अपराजेय शक्ति है।

- छायावाद व्यथा का सबेरा है - गीतिकाव्य

- रूप प्रकृति का दान है - स्मृति की रेखाएं

महादेवी के निबंधों की भाषा ललित, सरल और सरस हैं। गद्य काव्य का आनंद देने में वह पूर्ण रूप से समर्थ है। उनकी भाषा में मन की करूणा, वेदना और सहानुभूति तथा विचारों को वहन करने में सक्षम है। उनकी भाषा में एक विशिष्ट कलात्मकता, निखार और आकर्षकता है। समग्रत: महादेवी ने अपने निबंधों में विचार और अनुभूति को भाषा के व्यापक रूप में व्यक्त किया है। उनके शिल्प में विविधता है और निबंध को सृजनात्मकता दृष्टि से एक विराट रूप मिला है। जिसमें निबंध के साथ रेखाचित्र और संस्मरण जैसे गद्य रूपों का भी समावेश हो गया है।

३) डॉ. विद्यानिवास मिश्र :

आधुनिक स्वातंत्र्योत्तर युग के साहित्यकारों में डॉ. विद्यानिवास मिश्र एक प्रतिभासंपन्न साहित्यकार है। ललित निबंधकारों में उनका एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने हिंदी के ललित निबंधों को एक नयी सांस्कृतिक भावभूमि प्रदान की है। इन्होंने अपने निबंधों को प्रकृति के सौंदर्य, प्रेम भावना और सौंदर्य-बोध की भावभूमि से जोड़ा है।

विद्यानिवास मिश्र के ललित-निबंधों के संग्रह इसप्रकार हैं - 'छितवन की छाह', 'कदम की फूली डाह', 'तुम चन्दन हम पानी', 'मैंने सिल पहुँचाई', 'आंगन का पंछी और बंजारा मन', 'कटीले तारों के आर-पार', 'वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' इत्यादी । मिश्र जी की भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था रही । ललित निबंधकारों पर डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का व्यापक प्रभाव रहा है । मिश्र जी उन्हीं की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अपने निबंधों के माध्यम से सांस्कृतिक तरलता प्रदान करने का प्रयत्न किया है ।

'छितवन की छांह' आधुनिक हिन्दी निबंधों का एक मौलिक प्रतिमान है। इसके प्रसंग हमारे जन-जीवन से जुड़े है । मिश्रजी ने अधिकतर भावात्मक शैली में ही निबंध लिखे है । इस शैली में लिखे निबंधों में काव्यात्मक लय और भाव प्रवाह है । इसका एक उदाहरण इसप्रकार है - ''बरबस सपनों में उलझ गया कि कानों में एक कड़ी गूंजी - नंदक-नंदक कदम्ब तरूतर धीरे-धीरे मुरली बजाऊ आँखे खुली और देखा कि अपने गाँव के हीरा-सागर पोखरे की पूरबवाही अधढही भीत पर बैठा मैं संध्या की लाली की प्रतिछवि जल में निहारने की कोशिश कर रहा हूँ । पर लो, यह तो काली घनघटा आई और हीरा-सागर एकदम स्याह हो गया, जमुना के कालीदेह जैसा और इसमें वर्षा की होड़ भवरे खौल उठी है ।''[७३]

वे सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक सूत्रों को पिरोकर सहजता से अपनी बात कहते हैं । जिससे पाठक साधारणीकरण के निकट पहुँच जाता है । वर्ण्य विषय के आधार पर चुटकियां लेना उनकी विशेषता है । उनके व्यंग्य चुभते हैं पर उनमें सहजता होती है । भोजपुरी लोकगीतों और ग्राम्य जीवन का भी चित्रण उनके निबंधों में मिलता है । उसीप्रकार हर-सिंगार में शब्द कौतुक और आरोपित भावनाएं

है । 'आंगन के पंछी' में ध्यान काग की ओर है और निबंध गौरेया पर, वे प्रकृति को आँचलिक परिवेश में देखते हैं । उन्होंने लिखा है - ''आज यह गौरेया है कल घर की बिल्ली हो सकती है, परसों घर का दूसरा पशु हो सकता है और फिर चौथे दिन घर के प्राणी भी हो सकते हैं ।''[७४]

विद्यानिवास मिश्र का शब्द भंडार व्यापक है । उनकी भाषा अनेक रंगों से सजकर अर्थ की अनेक छटाओं को अभिव्यक्त करती है । उन्होंने अपने निबंधों में अधिकतर तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है । संस्कृत निष्ठता उसकी आधारभूमि है । वे संस्कृति और अंचल दोनों को अपने निबंधों में समेटे हुए हैं । उनमें कहीं-कहीं उर्दू, फारसी और अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग मिलता है । जैसे - हकीकत, मुसीबत, अन्दाज, मंजिल, फोटोग्राफी कम्पटीशन, गजट जैसे अनेक शब्द आते हैं । उन्होंने अपने निबंधों में कहावतें और मुहावरों का भी प्रयोग किया है - ''हमारे देश में भी सयाने लोग है, जो अपने नाम की अयोग्यता आंगन के टेढ़ेपन के ऊपर थोपने के लिए ऐसे-ऐसे सुझाव देते हैं कि अन्न इसीलिए कम पैदा हो रहा है कि चिड़याँ उन्हें खा जाती है, बंदर तहस-नहस कर जाते हैं, चुहे उन्हें कुतर जाते हैं और धूप उन्हें सुखा जाती है । इसलिए पहले इनके उन पर नियंत्रण होना चाहिए ताकि खेती अपने आप बिना मनुष्य के परिश्रम के उपजाऊ हो जाए ।''[७५]

मिश्रजी ने विचारात्मक निबंध भी लिखे हैं, जिनमें चिंतन-मनन एवं बौद्धिकता का प्राधान्य है । शुक्लजी की तरह उनमें विचारों की कसावट भी है । उनमें उल्लेखनीय निबंध है - 'नई पीढ़ी की बेचैनी', 'राष्ट्र भाषा की समस्या', 'आदर्शों का द्वंद्व', 'विवाहधूम', 'आम्रमंजरी' आदि । इनमें मिश्र जी ने बड़ी विद्वत्ता के साथ विविध महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला है । जैसे - परम्परा पर गंभीरता पूर्वक विचार, नई

पीढ़ी में व्याप्त आंदोलनों की विवेचना, राष्ट्रभाषा की समस्या पर गंभीर विचार, भारतीय विवाह प्रथा का प्रामाणिक विवेचन, आम्रमंजिरियों का रोचक वर्णन इत्यादी।

श्री नारायण चतुर्वेदी जी ने 'तुम चंदन हम पानी' की भूमिका में लिखा है कि इन निबंधों से गद्य काव्य का आभास होता है तथा हिन्दी में अभी तक ऐसे निबंध नहीं लिखे गए हैं जो गंभीर तो है साथ में कविता से भी इतने सरोबर हो इसकी भारतीय संस्कृति पाठक को आत्मविभोर कर देती है ।

इसप्रकार मिश्र जी का निबंध लेखन व्यापक परिवेश को समेटे हुए हैं। भाषा की सामर्थ्य और शब्द चयन की प्रतिभा के कारण उनके निबंधों में गजब का आकर्षण है । सारी विषयवस्तु लोकधर्मी चेतना से जुड़ने के कारण देशज शब्दों का व्यापक प्रयोग किया गया है । विवेचन और चित्रात्मकता का समावेश उनकी रचनाओं में इतने व्यापक रूप से हो गया है । जिसके कारण नये युग के निबंधकारों में उनका अपना एक विशिष्ट स्थान है । डॉ. विद्यानिवास मिश्र जी नये युग के निबंधकारों में वही स्थान रखते हैं जो ललित निबंधकारों में आधुनिक संदर्भ में हजारीप्रसाद द्विवेदी का है। उनके निबंध सृजन और शिल्प का ऐसा उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें भारतीय जीवन और परिवेश तथा परंपरा और मिथक का समन्वय है ।

४) कुबेरनाथ राय :

श्री. कुबेरनाथ राय साठोत्तर युग के श्रेष्ठ ललित निबंधकार है । इनमें वैयक्तिकता का सर्वत्र प्राधान्य है । वे कृत्रिमता और बनावटीपन से कोसो दूर है । उनके निबंधों में कहानी जैसा रस, उपन्यास जैसा कौतुहल और कविता जैसा आकर्षण है । वे व्यक्तिव्यंजक निबंध को ही वास्तविक निबंध मानते हैं ।

कुबेरनाथ राय में कवि हृदय की कोमलता एवं कल्पनाशीलता जन्मजात है । अपने भोजपुर अंचल विशेष की सघनता उनके व्यक्तित्त्व में दिखायी देती है । वे जब भी अपने गांव जाते तब वहाँ के प्राकृतिक रमणीय स्थलों, नदी तट, गाँव खेत, जंगल-पहाड़, पशु-पक्षी, देवी-देवता, प्राचीन मंदिर तथा विविध व्यक्तियों से मिलते। उनके निबंधों के अनेक संकलन प्रकाशित हुए है । जिनके शीर्षकों से ऐसा लगता है कि उनका मुख्य आधार प्रकृति सौंदर्य, मिथक सौंदर्य और सौंदर्य बोध है । प्रिया नीलकंठी, रसआखेटक, निषाद बांसुरी, गंधमादन, विषादयोग, महाकवि की तर्जनी और पर्णमुकुट उनके प्रमुख निबंध संकलन हैं । इन निबंध संग्रहों में ग्राम्य जीवन - लोक संस्कृति - रीति-रिवाज आदि के वर्णन मिलते हैं ।

रायजी के निबंध में मानवीय पक्ष का सहज उद्‌घाटन हुआ है । वे अनायास, सहज और अकृत्रिम ढंग से उसकी निर्मिती करते हैं । वे धर्म को उतना ही आवश्यक मानते हैं, जितना राज्य के लिए शासक और संविधान आवश्यक है । धर्म व्यक्ति के आचरण पर अंकुश रखनेवाली एक सत्ता है । 'शमी वृक्ष पर लटकते शव' इस निबंध में वे लिखते हैं ।

"मैं धर्म की आवश्यकता स्वीकार करता हूँ । जिसप्रकार एक संविधान चाहिए, एक सरकार चाहिए, वैसे ही एक धर्म तो चाहिए ही । बीना इसके समूह का काम चल नहीं सकता ।"

कुबेरनाथ राय का पहला निबंध संग्रह 'प्रिया नीलकंठी' है । इसमें दो बिंब उभरकर सामने आते हैं । एक बिंब प्रतिभा का है । जिसमें वे विष पाने वाले नीलकंठ को आधार मानते हैं और दूसरे बिंब की कल्पना सलीब पर लटके ईसा मसीह के जीवन पर आधारित है । विषपान करते हुए अनंत यातनाओं को भोगना यह

दार्शनिकता उसमें है । 'रस आखेटक' की सारी रचनाएँ लालित्य बोध से जुड़ी है । रायजी के सारे निबंध सांस्कृतिक चेतना और मूल संवेदना से भरे है ।

मनुष्य सुख-दुख हर स्थिति में प्रकृति को अपने निकट पाता है । जब भाव चरम अवस्था पर अभिव्यक्त होता है तब वह प्रकृति से उपादान ग्रहण करता है। कुबेरनाथ राय ने जीवन की सब स्थितियों को जैसे- बाल्यावस्था, किशोरावस्था, वयसंधि, नवयौवना, प्रेम की नोंक-झोंक इन सभी स्थितियों को प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूपों में देखा है । उसे निर्वासन और नीलकण्ठी प्रिया में इस प्रकार अभिव्यक्त किया - प्रकृति में कही वय संधि, पूर्वराग और नोंक-झोंक है । तो कही गर्भाधान और नया जन्म है, और कहीं कहीं पाकूरवर्णी निर्वाण है, वह मुक्ति है जिसकी साधना के लिए डाल-पातवाला शरीर मिलता है ।''[७६]

राय ने अपने निबंधों में ग्राम संस्कृति का कुशलता से चित्रण किया है। उन्होंने ग्राम संस्कृति का प्रकृति के साथ एक रिश्ता जोड़ दिया है । उनकी दृष्टि में वसंत का समग्र चित्र एक तरफ वौराते आम, आम्र मंजैरी के उपर मंडराते हुए भौरे, कुकती हुई कोयल, पेड़ो में आवाज आती कुहु-कुहू की नकल उतारते शरारती बच्चों का वर्णन इसप्रकार किया है - खलीहान का सौंदर्य फसले पकती है । हरियाली सुनहरी हो जाती है । यह दर्दभरी हरीतिमा तब तक व्यर्थ रहती है जब तक वह प्राणों को रोष और व्यथा की अग्नि में तपाकर पुष्ट न कर ले पछुवा हवा रस गाढ़ा कर देती है । रस को पकवा कर और मीठा कर देती है ।

- वसंत आया है पर ग्रीष्म में मिला-जुला एक ओर आम के टिकोरे लगते हैं । शीशम के नरम टूसे उगते है फिर डाल-डाल पर निर्मल हरियाली की झालर लग जाती है । दूसरी ओर फसल कटती है । खलिहान का वैधव्य समाप्त होता है ।

पछुवा हवा झकझोरकर बढ़ती है, भूसा एक ओर उड़ता है, दानों की खर-खर वर्षा होती है । लगता है ईश्वर का जन्म हो रहा है ।

कुबेरनाथ राय ने अपने निबंधों के लिए विषयानुकूल भाषा का चयन किया है । जिसमें कविता का लालित्य और सरसता है । उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी है । उन्होंने सूत्रात्मक वाक्यों के द्वारा अपनी भाषा का श्रृंगार किया है । जैसे - ''मनुष्य का संपूर्ण व्यक्तित्त्व लड़ता है और संपूर्ण व्यक्तित्त्व जीतता है ।''[७७]

- नारी रहस्य का सिंधु है ।[७८]

''व्याकरण भाषा का पुलिसमैन है ।''[७९]

कुबेरनाथ राय का संपूर्ण शब्द-चयन और वाक्य विन्यास तराशा हुआ है । उनकी भाषा में आलंकारिकता और लाक्षणिकता के साथ-साथ गंभीरता भी दिखायी देती है ।

जैसे - ''शरद की वीणा पर रसों का रस यह महारस स्थायी अन्तरा के साथ प्रतिवर्ष बज उठता है ।''[८०]

- ''धुएं के प्रेत सारे स्वरों को पी जायेंगे ।''[८१]

उनके निबंधों में आलंकारिक शैली का लालित्य सर्वत्र दिखाई देता है। इस शैली में अनुभूति की गहनता, कल्पना की तीव्रता के विविध अलंकारों का उचित प्रयोग हुआ है । जैसे - ''आसमान में कबीर की कविता जैसी लालिमा दहकने लगेगी और धीरे-धीरे वह पहली किरण अपना विस्तार करके तुलसी के यश जैसी धूप बनकर धरती पर फैल जायेगी ।''[८२]

कुल मिलाकर कुबेरनाथ राय जी के निबंधों में जीवनमूल्यों के प्रति गहरी आस्था दिखायी देती है । उसमें लेखक ने संकल्प और साहस जैसे मानवीय गुणों पर बल दिया है । वे अपने आप में एक सरस ललित निबंधकार है । वे भारतीय संस्कृति, इतिहास, पुराण लोकजीवन के सच्चे उद्‌गाता है ।

निष्कर्ष :

सामाजिक चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम निबंध है । अपने स्वतंत्र विचार और निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अपने व्यक्तित्त्व के छाप के साथ केवल निबंध में ही संभव है । निबंध ऐसी विधा है जिसमें निबंधकार का व्यक्तित्त्व प्रमुख होता है । वह स्वयं को पात्रों, घटनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है । निबंध में पाठक और लेखक का सीधा संबंध होता है । कुछ विषय तो स्वयं निबंधकार से जुड़े होते हैं । अत: इसप्रकार के निबंध आत्मपूरक, आत्माभिव्यक्ति या वैयक्तिक निबंध कहलाते हैं ।

निबंध में काव्य जैसी रमणीयता, भावुकता एवं सरसता होती है । नाटक जैसी गतिशीलता संवादात्मकता होती है, जीवनी जैसा आत्मविश्लेषण, रेखाचित्र जैसी चित्रमयता, आत्मानुभूति, मनोवैज्ञानिकता एवं कल्पना प्रवणता होती है ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने निबंध के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई । उन्हें आधुनिक निबंध का पहला लेखक भी कहा जा सकता है । भारतेन्दु के साथ ही बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र ने इस गद्य विधा को विकसित किया । जनजागरण, चेतना का उर्जस्वल प्रवाह, सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक संघर्षों की साहित्यिक अभिव्यक्ति और निश्चल वैयक्तिकता इस युग के निबंधों की

विशेषता कहीं जा सकती । इस युग के सभी लेखक हिंदी की परंपरागत मूल प्रवृत्ति को पहचानकर भाषा को व्याकरण संमत बनाने के आग्रही थे । शैली की दृष्टि से हिंदी गद्य बहुत कुछ बोल-चाल की शैली तथा भाषण शैली से प्रभावित था । भारतेन्दु युग के निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरण है, क्योंकि यह साहित्य की विधा जनजीवन से सीधी जुड़ी रही और इसने देश के स्वाधीनता संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

भाषा के परिमार्जन के साथ ही द्विवेदी युग का आरंभ हुआ । इस युग में उन सभी भावनाओं विचारों और शैलियों का विकास हुआ जिनका सूत्रपात भारतेन्दु युग में हुआ था । महावीर प्रसाद द्विवेदी ने निबंध रचना को नये आयाम दिये और रसस्वती पत्रिका के माध्यम से साहित्य रचना को खड़ीबोली के मानक रूप से जोड़ दिया ।

निबंध इस युग की महत्त्वपूर्ण रचना है और इस युग की गद्य शैली का पूर्ण विकास निबंध साहित्य में ही दिखाई देता है । द्विवेदीयुगीन निबंधों में विषय के चुनाव में भी विस्तार पाया गया । परिष्कृत भाषा के कारण उसे अनेक माध्यमों से अभिव्यक्त करने की लेखकों की रूचि रही । विचार प्रधान निबंधों के सृजन में यह युग बहुत सफल रहा । इस युग के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण निबंधकार सरदारपूर्णसिंह है । जिन्होंने केवल छः निबंध लिखे और उसमें आत्मव्यंजक और आवेगशील शिल्प का प्रयोग किया ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के बाद निबंध साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्लजी का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है । चिंतामणि में संग्रहित उनके निबंध हिंदी साहित्य की एक अमूल्यनिधि माने जाते हैं । उनकी रचनाओं में स्वच्छ

और स्पष्ट चिंतन, प्रौढ़ और सशक्त भाषा शैली और स्वस्थ अभिरूचि संपन्नता पायी जाती है ।

शैलियों की विविधता और विकास की दृष्टि से यह युग अत्यंत संपन्न है । भावात्मक और विचारात्मक निबंधों का निर्माण इस युग में हुआ । प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि आदि निबंधकार भावात्मक निबंधों के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । उन्होंने भाषा को कोमलता तरलता और काव्यात्मकता प्रदान की । निबंध इस युग में साहित्यिक चेतनासे ही अधिक प्रभावित रहा । उसने जीवन को समग्र रूप में देखा ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के उपरान्त आधुनिक हिन्दी साहित्य में निबंध का व्यापक विकास हुआ । हिन्दी निबंध ने अपने रूप को अनेक प्रकार से सजाया - संवारा । इस युग के निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता है बुद्धि और भाव तत्त्व के समन्वय की । इन निबंधों में एक ओर गहन गंभीर चिंतन और दूसरी ओर सहज व्यक्तित्त्व की अभिव्यक्ति दर्शनीय है । इस युग में हास्य व्यंग्यात्मक निबंधों ने भी अपनी एक अलग पहचान बनायी है । इनमें राजनीति और समाज की विसंगतियों पर गहरा व्यंग्य किया है । इन निबंधकारों में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रविन्द्रनाथ त्यागी प्रमुख है ।

ललित-निबंधों का एक श्रेष्ठ और परिमार्जित रूप भी हमें इसी युग में दिखायी देता है । जिसप्रकार विचारात्मक निबंधों का मानक आ. रामचंद्र शुक्ल में मिलता है । उसीप्रकार ललित निबंधों का प्रतिमान द्विवेदीजी में दिखायी देता है । द्विवेदी ने ललित के साथ ही विचारात्मक, शोधपरक और समीक्षात्मक निबंध भी लिखे । विद्यानिवास मिश्र ने ललित निबंधों को भारतीय साहित्य, संस्कृति के साथ ही

लोकजीवन से भी जोड़ने का प्रयास किया है । ललित निबंधों में कुबेरनाथ राय का भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है । उन्होंने इन निबंधों में सांस्कृतिक संदर्भ को जीवन के आधुनिक आयाम से जोड़ा है । ललित निबंधकारों में और एक महत्त्वपूर्ण नाम कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी का है । इनके निबंधों में इतिहास और संस्कृति का समावेश तथा भावुकता की प्रधानता है । उनके निबंधों का क्षेत्र व्यापक है । वे जीवन के सभी अंगों को स्पर्श करते हैं । इन निबंधों में उनका व्यक्तित्त्व ही प्रकट हुआ है। अगले अध्याय में हम कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर जी के साहित्य का सामान्य परिचय करेंगे ।

आज आधुनिक साहित्य में निबंधों का अपना स्वतंत्र स्थान है । निबंध-विधा आये दिन अपने रूप में नया निखार लाने के लिए प्रयत्नशील है । यही उसकी सजीवता और सरसता का जीवंत प्रमाण है ।

संदर्भ संकेत :

१) सं. धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोश भाग- १, पृष्ठ ४३८

२) आ. रामचंद्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४६३

३) वही,

४) बाबू गुलाबराय- काव्य के रूप, पृष्ठ २३६

५) डॉ. कोतमिरे - हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्‌भव और विकास, पृष्ठ २५३

६) डॉ. मु.ब.शहा- हिन्दी निबंधों का शैलीय अध्ययन, पृष्ठ २१

७) डॉ. जगन्नाथ शर्मा - आदर्श निबंध, पृष्ठ ९

८) डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृष्ठ ७१

९) डॉ. जयनाथ नलिन - हिन्दी निबंधकार, पृष्ठ १०

१०) आ. रामचंद्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४६७

११) आ. रामचंद्र शुक्ल - चिन्तामणि भाग - १, पृष्ठ

१२) हिन्दी निबंधकार - पृष्ठ २२

१३) हजारी प्रसाद द्विवेदी - साहित्य का साथी, पृष्ठ १२६

१४) गुलाबराय - काव्य के रूप, पृष्ठ २३५

१५) डॉ. रमेशचंद्र लवानिया - साहित्य विविधा, पृष्ठ ११३

१६) कुबेरनाथ राय - दृष्टि अभिसार, पृष्ठ ३

१७) डॉ. कुमार विमल - अत्याधुनिक हिन्दी साहित्य, पृष्ठ १४६

१८) डॉ. शंकर पुणतांबेकर

१९) डॉ. मु.ब. शहा

२०) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी - कालिदास की लालित्य योजना, पृष्ठ ११४

२१) आ. रामचंद्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ५५९

२२) बाबू गुलाबराय - काव्य के रूप, पृष्ठ २३५

२३) भारतेन्दु ग्रंथावली- तिसरा भाग, पृष्ठ ९४३

२४) वही, पृष्ठ ४९

२५) भारतेन्दु ग्रंथावली- तिसरा भाग, पृष्ठ ९४४

२६) साहित्य सुमन - आँसू, पृष्ठ १३४

२७) भट्ट निबंधावली - दूसरा भाग

२८) भट्ट निबंधावली

२९) वही

३०) भट्ट निबंधावली, पृष्ठ ७१

३१) हिन्दी प्रदीप - अक्तुबर १९८९, पृष्ठ २९

३२) वही, जून १८८३, पृष्ठ १६-१७

३३) प्रताप नारायण ग्रंथावली, पृष्ठ ८१

३४) वही

३५) अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध - हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, पृष्ठ ६६२

३६) प्रतापनारायण ग्रंथावली

३७) जयनाथ नलिन - हिन्दी निबंधकार, पृष्ठ ८९

३८) चिट्ठे और खत

३९) गुप्त निबंधावली

४०) गुप्त निबंधावली, पृष्ठ ५७०

४१) कवि कर्तव्य लेख रसज्ञ रंजन- महावीर प्रसाद द्विवेदी (निबंध एवं विविध गद्य पुस्तक से उद्घृत) पृष्ठ५४

४२) महावीर प्रसाद द्विवेदी - लेखांजलि, पृष्ठ २४

४३) वही, पृष्ठ ३६

४४) विचार विमर्श - (निबंध एवं विविध गद्य पुस्तक से उद्‌घृत) पृष्ठ ५६७

४५) हिन्दी साहित्य का इतिहास - आ. शुक्ल, पृष्ठ ४८६

४६) डॉ. जयनाथ नलिन - हिन्दी निबंधकार, पृष्ठ १०३, १०४

४७) साहित्यालोचन

४८) सरदार पूर्णसिंह - आचरण की सभ्यता, पृष्ठ १३१

४९) सरदार पूर्णसिंह - मजदूरी और प्रेम

५०) सरदार पूर्णसिंह - आचरण की सभ्यता

५१) गुलेरी - रचनावली

५२) आ. रामचंद्र शुक्ल - चिंतामणि

५३) वही

५४) वही

५५) वही

५६) वही

५७) गुलाब राय- प्रभुजी आँगन चित न धरो

५८) गुलाबराय - ठलुआ क्लब, पृष्ठ १४

५९) पं. माखनलाल चतुर्वेदी - साहित्य देवता

६०) वही, साहित्य देवता

६१) माखनलाल चतुर्वेदी - चिन्तक की लाचारी, पृष्ठ १२

६२) वही, पृष्ठ ०२

६३) वही, पृष्ठ ४

६४) माखनलाल चतुर्वेदी - साहित्य देवता, पृष्ठ १०१

६५) सियारामशरण गुप्त - झूठ सच, पृष्ठ २०३

६६) सं. डॉ. नगेन्द्र, सियारामशरण गुप्त, पृष्ठ १८१

६७) हजारीप्रसाद द्विवेदी - (डॉ. मु.ब.शहा की पुस्तक से उद्‌घृत)

६८) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी - अशोक के फूल

६९) महादेवी वर्मा - क्षणदा

७०) महादेवी वर्मा - स्मृति की रेखाएँ

७१) महादेवी वर्मा - क्षणदा

७२) महादेवी का विवेचनात्मक गद्य

७३) डॉ. विद्यानिवास मिश्र - तुम चंदन हम पानी, पृष्ठ १३६

७४) डॉ. विद्यानिवास मिश्र - छितवन की छाह

७५) डॉ. विद्यानिवास मिश्र - आंगन का पंछी और बंजारा मन

७६) कुबेरनाथ राय - प्रिया नीलकण्ठी, निर्वासन और नीलकंठी, पृष्ठ १०८

७७) कुबेरनाथ राय, गंधमादन, पृष्ठ २२

७८) कुबेरनाथ - रस आरवेट, पृष्ठ ४

७९) वही, पृष्ठ ५२

८०) वही, पृष्ठ ६५

८१) वही, पृष्ठ २५५

८२) वही, पृष्ठ १३५